

मू ल य

प्रथम संस्करण

प्रकाशक

मुद्रक

दो रुपये (२००)

दिनांक, १९५७

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली





शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के

अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म

२६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-आन्-एवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी ऐलिजाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे ज्ञायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यही आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने ममृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उनका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना मानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा वेन जानसन जैसे उनके समकालीन कवि उनका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्राय हो गये, और यह बङ्किम-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, बिनाएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, आँथेलो, मैकबेथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु खान्त), एक सपना (ए मिड समर नाइट्स ड्रीम), वेनिस का सौदागर, बारहवी रात, तिल का ताड़ (मच एंडू अवाउट नर्थिंग), जैसा तुम चाहो (एज यू लाइक इट), तूफान (सुखान्त) । इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं । प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं ।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है । उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं । जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती ।

भूमिका

एक सपना (ए मिड समर नाइट्स ड्रीम) शेक्सपियर का एक अत्यंत प्रसिद्ध गीतात्मक सुखात नाटक है। यह उसके रचनाकाल में पहले निर्माणयुग के अंतर्गत आता है। इसी युग में उसने 'लव्स लेवर्स लॉस्ट', 'टू जेन्टलमैन आफ वेरोना', 'कॉमेडी ऑफ एरर्स' इत्यादि नाटक लिखे थे। 'रोमियो एण्ड जूलियट' उसका प्रसिद्ध दुःखात नाटक भी इसी काल में आता है।

इसका कथानक वन देवता, परियो इत्यादि को ले कर चलता है। इसमें प्राचीन ग्रीस के पात्र हैं, तथा निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले अभिनेता हैं, जिनमें वोटम है, जो शेक्सपियर का एक प्रसिद्ध पात्र है।

इस नाटक में प्रकृति का बड़ा ही सुंदर चित्रण हुआ है। भरने, फूल, छाया और ज्योत्स्ना का मनोहर वर्णन है। इसके अतिरिक्त इसका मुख्य विवेच्य प्रेम है और प्रेम भी बड़ी चुभन वाला, किंतु वह अवसाद को नहीं, सुख की प्राप्ति को प्रस्तुत करता है। ऐसा लगता है जैसे कोई कल-कल निनाद करता हुआ भरना वह रहा हो।

यद्यपि शेक्सपियर के आलोचक उसके 'वारहवी रात' नामक सुखात नाटक को अधिक परिपक्व मानते हैं, परंतु मुझे यही अच्छा लगता है, क्योंकि इसमें शेक्सपियर अधमकाव्यत्व की ओर नहीं प्रेरित हुआ, शब्दों का जाल यहाँ नहीं के बराबर है। हास्य तो इसमें इतना सशक्त है कि शेक्सपियर की मेधा को देख कर हृदय आप्लावित हो जाता है। यहाँ 'पक' अलौकिक होते हुए भी एरियल की भाँति दिव्यत्व को

प्राप्त नहीं करता, अतः वह हमें गुदगुदाता रहता है ।

✓ मनुष्य के प्रेम, उसके लौकिक व्यवहार की मूर्खता को
कवि ने ऐसा उभार कर रखा है कि पढ़ते-पढ़ते तवियत लोट-
पोट हो जाती है और जब बीटम गंधे का सिरलिये टिटानिया
के प्रेम का पात्र बनता है, तब तो देखने योग्य दृश्य बन जाता
है । शेक्सपियर के युग में दृश्य नहीं होता था, उसकी कल्पना
की जाती थी । किंतु यदि अब भी इस नाटक को खेला जाय
तो अधिक बाह्य उपकरणों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और
नाटक बहुत रोचक बन सकेगा । अपने से पूर्वकाल के नाटक पर
शेक्सपियर ने बड़ा ही मीठा व्यंग्य कसा है । अमर और मर्त्यों
का यह संयोग यहाँ ऐसा सहज आ बैठा है कि हमें अस्वाभाविक
भी अस्वाभाविक-सा नहीं लगता, क्योंकि घटना का आकर्षण
हमें जड़ यथार्थ से ऊपर उठा कर उधर ले जाता है, जिधर
लेखक ने आनंद की सृष्टि की है । इसमें हम दैवी और पार्थिव
व्यापकत्व का एक-सा सम्मिश्रण प्राप्त करते हैं और प्रेम स्वयं
हमें समान दिखाई देता है । ड्रायडन ने शेक्सपियर के इसी
अलौकिक की सहजता की प्रशंसा की है ।

अनुवाद करते समय अनुभव किया कि अपने अन्य अनु-
वादों की भांति यदि मैं इसका भी गद्यानुवाद कर दूँ तो
शेक्सपियर का उचित प्रतिनिधित्व नहीं हो सकेगा । इसीलिये
शेक्सपियर ने जहाँ गद्य का प्रयोग किया है, वहाँ मैंने गद्य में
अनुवाद किया है और जहाँ उसने पद्य का प्रयोग किया है, वहाँ
मैंने भी पद्य को ही स्थान दिया है । मेरे मित्रों की राय यह
है कि यह अनुवाद शेक्सपियर के लांकित्य और प्रमाद को भी
उतार ला सकने में समर्थ हुआ है, बाकी स्वयं पाठक इसका

अंतिम निर्णय दे सकेंगे । पद्यानुवाद-भाग को कथोपकथन की दृष्टि से रखा गया है । पद्य होते हुए भी उसे गद्य के रूप में वैसे ही बोला जा सकता है, जैसे शेक्सपियर का पद्य । कही-कही किसी पुरानी कथा का सदर्थ ऐसा आ गया है, जो हिंदी की गति में दुरुहता उपस्थित करने वाला प्रमाणित हुआ । मैंने उसे थोड़ा बदल दिया है, भावात्मक अनुवाद का प्रश्रय लेकर । और नीचे फुटनोट में मूल का उल्लेख कर दिया है ।

कुछ लोगो का मत है कि शेक्सपियर ने यहाँ निम्नवर्ग का मजाक उड़ाया है, तभी बढई, लुहार, वुनकर, ठठेरा इत्यादि को उपहासास्पद चित्रित किया है । वस्तुतः ऐसा नहीं है । कवि ने नाटक के पुराने अभावो की ओर ध्यान आकर्षित किया है और अपने नाटक सबघो उद्गारो को थीसियस के मुख से कहलवाया भी है, जिनका बहुत बड़ा महत्त्व है । जीवन की मूल विवेचना का जहाँ तक प्रश्न है, शेक्सपियर इस रचना में भी पोछे नहीं रहा है, यही कारण है कि प्रायः उसकी अधिकांश रचनाओं में विशेषता उसकी अपनी ही बनी रहती-सी मिल जाती है ।

मनुष्य के पार्थिव का जो महत्त्व कवि ने उसके सारे हल्के-पन के साथ यहाँ प्रस्तुत किया है, ऐसा अन्यत्र मिलना काफी कठिन है । रोमान्टिक कवियों में जो कल्पना का आनंद आगे हमें अंगरेजी साहित्य में बढता हुआ मिलता है, शेक्सपियर में हमें उसका एक अन्य ही रूप दिखाई दे जाता है ।

—रागेय राघव



पात्र-परिचय

थीमियस

एजियस

लाइसैन्डर

डेमेट्रियस

फाइलोस्ट्रेट

क्विन्स

स्नग

बोटम

पलूट

स्नाउट

स्टारवॉलिंग

हिप्पोलिटा

हर्मिया

हेलेना

ओवेरोन

टिटानिया

पक

पोजन्चोमम (मटर का फूल)^१

कौबवंच (जाला)

मौय (पनगा)

मन्टर्डमोड (सरसो का बीज)

एथेन्स का ड्यूक

हर्मिया का पिता

हर्मिया के प्रेमी

थीसियस के आनदोत्सव का प्रवचक

एक बढई

लुहार

एक बुनकर

घौकनी बनाने वाला

ठठेरा

एक दर्जी

एमेज़ोन लोगो की रानी, थीसियस से उसका

विवाह होने वाला है

एजियम की पुत्री, लाइसैन्डर से प्रेम करती है

डेमेट्रियम से प्रेम करती है

परियो का राजा

परियो की रानी

} परियां

अन्य सेवक तथा परियां आदि

^१ इन शब्दों का भावार्थ । पाठक को कल्पना का रूप देयना चाहिये ।

पहला अंक

दृश्य १

[एथेन्स, थोसियस का प्रासाद]

[थोसियस, हिप्पोलिटा, फाइलोस्ट्रैट तथा सेवको का प्रवेश]

थीसियस
 आह सुदरी हिप्पोलिटा ! आ रहा देखो
 वह क्षण धीरे धीरे कितना पास हमारे
 जब हम तुम मिल जायेगे, फिर एक वनेगे ।
 करवट बदलें चार दिवस बस यही प्रतीक्षा,
 चौथे दिन का चंद्र नया जीवन लायेगा,
 मिटती है यह क्षीण क्षीणतर होती होती
 मद्य चद्रिका, तरुण विकल प्रेमी के मन को
 छीज छीज कर काट रही सी जैसे कोई
 विधवा अपना हृदय शीतले भाव रहित हो ।

हिप्पोलिटा चार दिवस तो अधियाली रातों के गहरे
 गह्वर में जा
 खो जायेंगे, और चार रातें सुपनों में
 वहला देगी काल व्याप्ति को ।
 और चंद्रमा नया, गगन में वन चाँदी का
 झुका हुआ धनु, होगा उदित हमारे आनंदों का
 बनने सदर साक्षी

थीसियस जाग्रो ! फाइलोस्ट्रैट ! जगा दो,
तुम एथेन्स नगर के सारे तरुण जनो को

होने दो आनंद और मंगल के उत्सव ।
 सुख विगास की कोमल चेतनता को जा कर
 आज जगा दो ।
 अरे मरण के नील अक मे खो जाने दो
 जो विपाद की पीड़ा मे व्याकुल रहते है ।
 अपने इस आमोद मुखर मे शिथिल प्राण का सग
 न होगा ।

[फाइलोस्टैंट का प्रस्थान]

[एजियस, हमिया, लाइसेन्डर और डेमेट्रियस का प्रवेश]

एजियस • जय । थीसियस तुम्हारी जय हो, अहे
 यशस्वी ड्यूक हमारे ।
 थीसियस स्वागत, धन्यवाद हे सज्जन, श्रेष्ठ एजियस,
 क्या सवाद सुघर लाये हो तुम हित मेरे ?
 एजियस आह ! विकल विक्षुब्ध हृदय हों मैं आया हूँ ।
 मेरी पुत्री, मेरी ही बालिका हमिया, लक्ष्य बनी है
 मेरे इस अगारक क्रोधानल का सचमुच,
 डेमेट्रियस ! डवर आओ तुम ।
 हे कुलीन शामक मेरे ! यह मुने एक क्षण ।
 यह ही है वह व्यक्ति चाहता हूँ मैं जिसे
 परिणय कर ले मेरी पुत्री ।
 लाइसेन्डर ! तुम इधर खड़े हो ।
 हे दयालु शामक प्रवीर ! यह विनय मुने अब,
 यही व्यक्ति है जिसने मेरी कोमल दुहिता
 पर फैलाया अपना भीषण इद्रजान है
 ओ लाइसेन्डर ! तूने, तूने

गीत सुनाये इस चपला को और प्रेम के
उपहारो को इससे पाया, इसको तूने बहुत
भेट दी है बहला कर ।

और चाँदनी रातो मे तूने ही इसके शयन कक्ष के
वातायन के नीचे आकर गीत सुनाये करुण कंठ से,
प्रेम, सुवकती तूष्णा वन कर ब्रह्म-वह जिनसे
भिगो गया मन ।

अपने केशपाग की घुँघराली छवियों से,
छल, चतुराई, मुद्रा, दूतो और मिठाई
आदि अनेको चालो का करके प्रयोग ही
तूने इसके अपरिपक्व यौवन में इसके चपल हृदय को
जीत लिया है !
तेरी छलमय दृढ़ता डमके इस अनजाने चपल मनस को
हिला गई है ।

तूने ये पडयत्र गहन कैसा फैलाया ।
मेरी पुत्री मुझसे ही विद्रोह कर रही ?
मैंने उमे विनीत बनाया था पर तूने
उसकी वाणी मे यह ऐसे शूल भर दिये ।
हे कुलीन शासक यह देखे ।

यदि यह कन्या करती है स्वीकार नहीं अब
डेमेट्रियस वीर से अपना परिणय करना,
यहाँ सामने हे दयालु प्रभु । स्वयं आपके,
तो एथेन्स का वही पुगत्तन न्याय माँगता हूँ मैं इस क्षण,
यह मेरी है, मैं इसका कुछ भी कर सकता
या तो यह स्वीकार करे यह तरुण, जिसे मैंने स्वीकारा,

या फिर मुख में जाये निश्चय आज मृत्यु के,
अपना जो हो नियम न्याय बस वही चाहता हूँ लागू हो,
हे दयालु शासक केवल मेरी है यह ही विनय एक बस ।
कहो हर्मिया । कुछ कहना है ? सुघर बालिके ।
समझो यदि कोई समझाये ।

थोसियस

अरे पिता है स्वयं देवता हेतु तुम्हारे ।
वह ही है निर्माता, सर्जक सकल रूप का
और आकृति का किंतु तुम्हारी ।
उमके लिये मोम की पुतली हो तुम देखो,
वह चाहे तो भले मिटा दे तुम्हें, बना दे ।
डेमेट्रियस । योग्य वर है यह । यह तो देखो ।
ऐसा ही तो ताइसैन्डर है ।

हर्मिया

थोसियस

वह अपने में भले योग्य है,
किन्तु यहाँ तो प्रश्न तुम्हारे पूज्य पिता की
स्वीकृति का है, इसलिये यह युवक दूसरा
अधिक योग्य है ।

हर्मिया

आह चाहती हूँ मैं किन्तु,
मेरे पिता देखते यदि मेरी आँखों से)

थोसियस

अधिक उचित हो यदि वह नयन तुम्हारे देखे
पूज्यपिता के दृष्टिकोण से ।


हर्मिया

हे श्रीमान् दयालु । क्षमा कर देग मुझको,
यही प्रार्थना करती हूँ मैं ।

नहीं जानती किम अभन माहसी शक्ति ने
मुझको ऐसा सुखर वर दिया ।

नहीं जानती, मेरा वह सकोच सुलभ नारी का भी
किस ओर क्या हुआ !

जो मैं यहाँ उपस्थिति में ऐसी प्रगल्भ हो व्यक्त कर रही
भाव हृदय के !

पर दयालु ! विनती करती हूँ, एक चाह है मेरे भीतर,
यह बतलायें, यदि मैं डेमेट्रियस न चुन कर, 
करूँ विवाह न उससे तो क्या
आयेगी विपत्तियाँ मुझ पर !

थीसियस

नियम यही है—या तो तुमको जाना होगा
मृत्यु दण्ड में, या मानव समाज से विलकुल
परित्यक्त हो दूर पड़ेगा रहना अपना बाकी जीवन !
मुवर हर्मिया ! इसीलिये अपनी तृष्णा से
कर लो तर्क वितर्क सोच कर ।

अपने यौवन से तो पूछो, अपनी चपल वासना के
उच्छृंखल आवेशों को परखो,
यदि तुम अपने पूज्य पिता की आज्ञा का पालन न
कर सकी,

तो क्या साध्वी का कठोर जीवन सह लोगी ?
ब्रह्मचारिणी का एकांत न खा डालेगा तुमको बोलो ?
वह अनंत सूनापन उस नीरव जीवन का,
जिममें नहीं ताप मिलता कोई रजन का ?
दीन वामना हीन चद्रमा —

उमें देखकर कब पक पीडित मग्न निभूत में
बोल सकोगी ?

उम समय की मर्यादा का पालन करने वालों को

या फिर मुख में जाये निश्चय आज मृत्यु के,
अपना जो हो नियम न्याय वस वही चाहता हूँ लागू हो,
हे दयालु शासक केवल मेरी है यह ही विनय एक वस ।
कहो हर्मिया ! कुछ कहना है ? सुघर बालिके ।
समझो यदि कोई समझाये ।

अरे पिता है स्वयं देवता हेतु तुम्हारे ।
वह ही है निर्माता, सर्जक सकल रूप का
और आकृति का किंतु तुम्हारी ।
उसके लिये मोम की पुतली हो तुम देखो,
वह चाहे तो भले मिटा दे तुम्हें, बना दे ।
डेमेट्रियस ! योग्य वर है यह । यह तो देखो ।
ऐसा ही तो लाइसेन्डर है ।

हर्मिया
थीसियस

वह अपने में भले योग्य है,
किन्तु यहाँ तो प्रश्न तुम्हारे पूज्य पिता की
स्वीकृति का है, इसलिये यह युवक दूसरा
अधिक योग्य है ।

हर्मिया

आह चाहती हूँ मैं कितना,
मेरे पिता देखते यदि मेरी आँखों से ।

थीसियस

अधिक उचित हो यदि वह नयन तुम्हारे देखे
पूज्यपिता के दृष्टिकोण से ।

हर्मिया

हे श्रीमान् दयालु ! क्षमा कर देगे मुझको,
यही प्रार्थना करती हूँ मैं ।
नहीं जानती किस अभूत साहसी शक्ति ने
मुझको ऐसा मुखर कर दिया ।

नहीं जानती, मेरा वह सकोच सुलभ नारी का भी

किस ओर क्या हुआ ।

जो मैं यहाँ उपस्थिति में ऐसी प्रगल्भ हो व्यक्त कर रही

भाव हृदय के ।

पर दयालु । विनती करती हूँ, एक चाह है मेरे भीतर,

यह बतलाये, यदि मैं डेमेट्रियस न चुन कर,

करूँ विवाह न उससे तो क्या

आयेगी विपत्तियाँ मुझ पर ।

थीसियस

नियम यही है—या तो तुमको जाना होगा

मृत्यु दष्ट में, या मानव समाज से विलकुल

परित्यक्त हो दूर पड़ेगा रहना अपना बाकी जीवन ।

सुवर हर्मिया । इसीलिये अपनी तृष्णा से

कर लो तर्क वितर्क सोच कर ।

अपने यौवन से तो पूछो, अपनी चपल वासना के

उच्छृंखल आवेशों को परखो,

यदि तुम अपने पूज्य पिता की आज्ञा का पालन न

कर सकी,

तो क्या साध्वी का कठोर जीवन सह लोगी ?

ब्रह्मचारिणी का एकांत न खा डालेगा तुमको बोलो ?

वह अनंत मूनापन उस नीरव जीवन का,

जिममें नहीं ताप मिलता कोई रजन का ?

दीन वामना हीन चद्रमा —

उसे देखकर कब पक पीडित मंत्र निभूत में

बोल सकोगी ?

उम मयम की मर्यादा का पालन करने वालों को

मत समझो तुम कोई साधारण,
 क्या कौमार्य तुम्हारा ऐसी
 तीर्थयात्रा की कठोरता भेल सकेगा ?
 वह गुलाब का फूल खिला रहता काँटों पर,
है अनत एकात अकेला उसका साथी,
वही फूलता, वही रूप की ज्योति जगन्मा
और वही मुरझाकर होता लीन काल के महाशून्य में ।

श्रेयस्कर है, किंतु प्रेय वह नहीं जगत में ।
 धरती का मुख है इसके स्पर्शों में चंचल ।
 हे प्रभु ! मैं कौमार्य विना दूंगी यह अपना
 उसी निभृत के तप्त कुसुम सी,
 किंतु भार यह अस्वीकृत है मुझे आपका,
 यह स्वामित्व मुझे क्षण भर स्वीकार नहीं है ।
 क्षण भर सोचो और शब्द दो तब विचार को ।
 अभी समय है । नये चद्र के आने तक लो—
 जब मैं और प्रिया मेरी दोनों ही मिल कर
 एक पाश में लय होवेंगे,

उल्लघन कर आज्ञा अपने पूज्य पिता की
 उस दिन या तो मृत्यु-विवर में जाने को तैयार रहो तुम,
 या इस डेमेट्रियस सुघर से परिणय कर लो ।
 या वेदी पर सुमुखि डायना देवी की यह करो प्रतिज्ञा
 तपस्पूर्ण जीवन कठोर एकात वरोगी ।

डेमेट्रियस

आह हर्मिया ! रुको, अहे लाइसेन्डर अब तो
 हठ को त्यागो ।

यह मेरा अधिकार एक है, इसके सन्मुख

लाइसैन्डर

मत रखो अपने मन की यह चपल चाहना ।
डेमेट्रियस ! तुम्हे तो उसके पूज्य पिता का
प्रेम मिला है ।

एजियस

मुझे हर्मिया का मिल पाया मधुर प्रेम है ।
पूज्य पिता से ही विवाह कर लो तुम अपना ।

ओ जघन्य लाइसैन्डर ! इसने मेरी
प्रेमराशि पाई है, औ' है जो कुछ मेरा
मेरा प्रेम उसे उस सब को निश्चय देगा ।

यह मेरी है, इस पर मेरा जो अधिकार प्राप्त है मुझको
वह मैं डेमेट्रियस सुजन को निश्चय दूंगा ।

लाइसैन्डर

हे श्रीमान् ! जहाँ तक कुल का प्रश्न खड़ा है,
मैं भी तो कुलीन हूँ इसकी भाँति, शुद्ध हूँ ।
मेरा वैभव भी है इसकी भाँति यशस्वी ।

इन गर्वीले कथनों से ऊपर है मेरे सुखद भाग की
उज्ज्वल गरिमा,

मैं सुदरी हर्मिया का हूँ प्रेमपात्र, ससार जान ले ।

क्यों अपना अधिकार न माँगू फिर यह बोलो ?

डेमेट्रियस ! शपथ है सच तुम भूँठ न कहना ।

क्या तुम ही वह व्यक्ति नहीं हो जिसने बोलो

हेलेना, दुहिता नेडर की, परम सुदरी,

पहले वहलार्ड थी अपनी प्रीति प्रगट कर ?

क्या तुमने ही उसका हृदय नहीं जीता था ?

वह सुदरी विचारी कितना तुमसे करती प्रेम, प्रेम में
तुम्हे स्वयं देवता समझती,

3/2/24

किसे । तुम्हे । । तुम जो अस्थिर, चंचल मानव हो ।
रस के लोभी !

थीसियस

करता हूँ स्वीकार कि अवगत हूँ मैं इससे,
 सोचा था कि करूँगा इस पर बात कभी मैं
 डेमेट्रियस सुजन से निश्चय ।
 किन्तु कार्य के भीम भार से लदा हुआ मैं
 भूल गया था ।

डेमेट्रियस सुनो, आओ तुम सग एजियस ।
 मेरे सग चलो तुम दोनों । तुमसे मुझको करनी है
 एकात बात कुछ ।

सुघर हर्मिया । पूज्य पिता की आज्ञा का पालन
 करने की

चिंता करना ध्येय तुम्हारा बने अभी से ।

और नहीं तो नियम देख लो वही पुरातन
 इस एथेन्स नगर का सुन लो ।

मृत्यु या कि एकातवास बस दो ही पथ है ।
 हिप्पोलिटा प्रिये आओ । अब चले यहाँ से,
 प्रेयसि मेरी । डेमेट्रियस, एजियस आओ ।
 मुझे तुम्हे कुछ आवश्यक है कार्य बताना
 इस विवाह का, और तुम्हारे ही वारे में
 कुछ बातें भी तो करनी हैं ।

एजियस

श्रद्धा औ' इच्छा से हम तत्पर हैं स्वामी ।

[लाइसेन्डर और हर्मिया के अतिरिक्त सबका प्रस्थान]

लाइसेन्डर

प्रेयसि । यह क्या ? क्यों कपोल हो गये तुम्हारे
 ऐसे पीले ?

कैसे यह गुलाब मुरझाये जाते हैं इतनी तेजी से ?
 हमिया मेरे नयनों के तूफानों की वर्षा की इन्हे चाह है,
 उससे सिंचन पाकर यह फिर जाग्रत होंगे ।
 लाइसेन्डर आह ! बताता है इतिहास मुझे यह अब तक
 सच्चा प्रेम कभी भी पथ न सहज पा सका ।
 या तो कुल का भेद बीच में बध बन गया—
 हमिया ऊँच नीच का था व्यवधान कठोर बीच में ।
 लाइसेन्डर या फिर भेद आयु का आया ।
 हमिया प्रेयसि-प्रियतम में कितना छल यो समा गया ।
 लाइसेन्डर या फिर कोई अन्य मित्र ही चुनता सगी
 हमिया ओ धिक्कार कि वर या वधू चुने आकर यो
 किसी और की आँख ! भला क्या होगा उसमें ?
 लाइसेन्डर यदि दोनों ही ओर प्रेम सवेदन पाकर
 योग्य पात्र में हुआ, उम समय
 युद्ध, मृत्यु या रोग डाल देते हैं घेरा
 आकर उस पर,
 ध्वनि सा उसे क्षणिक कर देते,
 छाया सा चल, अरे स्वप्न सा तधु कर देते ।
 जैसे स्याह रात में विजली पलक भपकते
 गगन भूमि को चकाचौंध में दर्शित करती—
 इससे पूर्व कि मनुज पुकारे 'सावधान हो',
 निमिष मात्र में अधकार के भीषण जबड़े
 उसे निगलते,
 उज्ज्वल वस्तु विलय को पाती यो क्षण भर में ।

हर्मिया

तब तो सच्ची प्रीति सदा वधन पाती है
 यही भाग्य का यदि निर्णय है,
 आओ तब तो हम सकट में धैर्य बरेंगे ।
 यह तो नियम सदृश है वधन ।
 ज्यो कि प्रेम में दीन कल्पना के अनुयायी

✓ स्वप्न, चाहना, अश्रु, आह, उच्छ्वास, भावना
प्रेम-नियम है ।

लाइसेन्डर

आह ! हृदय कैसे समझाया !
 सुनो हर्मिया ! विधवा चाची है मेरी अति धनी एक, जो
 है एथेन्स से दूर सात योजन औ' मुझको
 अपना पुत्र समझती, वह जो पुत्रहीन है ।
 प्रिये हर्मिया ! वहाँ करेंगे हम विवाह चल,
 इस एथेन्स के तीक्ष्ण नियम यह, वहाँ नहीं सच,
 पीछा अपना कर पायेंगे । यदि है तुमको
 मुझसे सचमुच प्रेम हर्मिया ! तो कल निशि में
 निकल चलो तुम घर से अपने पूज्य पिता के,
 और नगर से योजन भर की दूरी पर ही
 वन में जहाँ हेलेना के सग मिला कभी था
 तुमसे एकवार मैं पहले, ग्रीष्म प्रात की
 पूजा की थी मैंने जिस दिन,
 वही तुम्हारी प्रिये ! प्रतीक्षा आह करूँगा !
 हे मेरे प्रियतम लाइसेन्डर !

हर्मिया

गपथ काम के धनु प्रचण्ड की,
 उसके शर-सुवर्ण मुख की सौगंध मुझे है,
 वीनम देवी के विहंगों की सहज सरलता

की है मुझको शपथ, कि जिसके
बल पर दृढ़ हो प्रेम समृद्ध हुआ करता है,
जबकि दिखा था झूठा ट्रायन चढा पोत पर
उसी अग्नि की शपथ कि जिसने धधक जला दी
कारथेज की रानी, सचमुच

उन शपथों की शपथ जिन्हें पुरुषों ने तोड़ा,
जिनकी सख्या कही अधिक नारी-वचनों से,
वही मुझे तुमने है प्रियतम पुन बुलाया ।
कल आऊँगी तुमसे मिलने मैं निःसंशय ।

लाइसेन्डर

पूरा करना वचन प्राण । लो देखो तो वह
हेलेना आ रही इधर है ।

[हेलेना का प्रवेश]

हर्मिया

हेलेना तुम किधर चल पड़ी ? करे भला
भगवान तुम्हारा अहे सुदरी ।

हेलेना

मुझे सुदरी कहती हो तुम ? मत कहना फिर,
अहे सुदरी । तुम हो सुदरि,
डेमेट्रियस प्यार करता है तुमको ।

रूप तुम्हारे नयनों से वरसा करता है,
कोकिल से भी मीठे मनहर वैन तुम्हारे
जो वसंत के फुल्लकुमुम मकरदो में रह
कूका करता ।

आह वेदने ! होता मेरा भाग्य कही सच
तुम जैसा ही सुघर हर्मिया ।

पानी यदि मैं भर आँखों में रूप तुम्हारे इन नयनों का,
यह स्वर कोमल मुझमें यदि रम पाते तो प्रिय ।

डेमेट्रियस प्राप्त यदि हो जाये फिर मुझको
मैं प्रतिष्ठाया बनने को प्रस्तुत हूँ देखो

सुधर तुम्हारी प्रिये हर्मिया ।

हर्मिया

मुझे सिखादो वह सम्मोहन, जिसके द्वारा
डेमेट्रियस-हृदय को तुम हो जीता करती,
उसे देखती तिरस्कार से सदा किन्तु मैं

फिर भी प्यार मुझे करता है,

हेलेना

आह तुम्हारा तिरस्कार यदि सिखा सके यह
कौशल मेरी मुस्कानो को ।

हर्मिया

मैं तो उसको सदा गाप देती रहती हूँ,
फिर भी वह तो प्यार प्यार देता है मुझको ।

हेलेना

यदि मेरी प्रार्थना प्रणय को तनिक जगाती ।

हर्मिया

जितनी करती हूँ मैं उससे घृणा तीक्ष्णतर
उतना ही वह मेरे पीछे डोला करता ।

हेलेना

जितना अधिक प्यार करती हूँ उसको प्रिय मैं
उतना ही वह मुझे घृणा करता है आली ।

हर्मिया

हेलेना ! मूर्खता किन्तु उसकी यह सारी
मेरा तो अपराध नहीं है कोई निश्चय ।

हेलेना

नहीं, तुम्हारा नहीं, तुम्हारे सलज रूप का ही है आली,
होता यदि मौजूद कही मुझमें ही हे सखि
यह सुंदर अपराध तुम्हारा ।

हर्मिया

धीरज धरो ! अब न देख पायेगा वह मुख
मेरा सुन लो ।

लाइसैन्डर औ' मैं अब निश्चय, कर जायेगे
इस वधन की दीन जगह से दूर पलायन ।

लाइसैन्डर के मिलने से पहले तो मुझको
यह एथेन्स स्वर्ग लगता था,
आह प्रेम मे जाने कैसी है विचित्रता }
अब वह स्वर्ग नरक लगता है ।

लाइसैन्डर

हेलेना ! रहस्य तुमसे न रखेगे,
कल जब चद्र-देवि देखेगी
चांदी सा प्रतिविम्ब सुधर प्रिय
पानी के दर्पण मे अपना मुखर रजनि मे,
दूबो पर विखरायेगी मोती सिंगार के चपल पनीले,
समय-मीत जब प्रेयसि-प्रिय के मुग्ध पलायन
को है देता छिपा स्नेह से,
हम एथेन्स के सिंहद्वार से निकल जायेगे ।

हर्मिया

यही योजना की है निश्चित ।
उम वन मे ही, जहाँ गुलाबो की शैय्या रच
बहुधा हम तुम अलसाई सोया करती थी ।
अपने मन के मीठे-मीठे भेद परस्पर
खोला करती थी मुस्काती ।
वही मिलूंगी मैं अपने प्रिय लाइसैन्डर से ।
नयन फिरा लेंगे एथेन्स से सखी वही से ।
नये मित्र, नूतन समाज ढूंढने विश्व मे
कही चल पडेगे हम नूतन पथ ग्रहण कर ।
विदा ! सखी ! कितने खेलो की प्यारी साथिन !
करो हमारे नित्ये प्रार्थना परमात्मा से ।
हो मौभाग्य पूर्ण तेरा भी, मिले तुझे वह
तेरा प्रियतम, डेमेट्रियस प्यार दे तुझको ।

गहरी आधी रात नलक कल हे लाइसैन्डर ।
नयन तृपित ही रहे हमारे, प्रेम-अमृत से दूर,
क्योंकि कल दर्शन होगा ।

वचन निभाना ।

लाइसैन्डर

क्यों सदेह भला करती हो । निश्चय जानो ।

[हर्मिया का प्रस्थान]

विदा, हेलेना ।

जैसे तुम हो उसे चाहती,

वैसा ही वह करे प्यार तुमसे डेमेट्रियस ।

[प्रस्थान]

हेलेना

किसका किसको हर्ष प्राप्त होता है जग में
कौन जानता ।

मैं ऐथेन्स में इस जैसी ही मानी जाती सुघर सुन्दरी ।
पर इससे क्या । डेमेट्रियस सोचता ऐसा भला कहाँ है ?
वह क्या जानेगा जो सबको ज्ञात हृदय में,
उसे हर्मिया के नयनों में जीवन भूला, जैसे मैं हूँ
उसके गुण पर रीझी जाती ।

घृणित और कुत्सा असीम तक को भी तो यह
प्रेम एक देता है गौरव,

प्रेम नयन से नहीं देखता, वह तो मन की
आँखों से देखा करता है।

तभी पखमय कामदेव को अधा ही
सब माना करते,

और प्रेम के मन की भी पसन्द को कोई
नहीं बता सकता है जग में ।

नयनहीन, वस पख, और गतिचबल धावित,
तभी प्रेम को चपल चपल बालक सब कहते,

क्योंकि वरण उसके सदैव है आतुरता में

भूल-भूल से बन जाते हैं,

खेल खेल में जैसे बालक दाँव लगाते

प्रेम इसी विधि सब कुछ ही खोया करता है ।

डेमेट्रियस हर्मिया के नयनों की छवियाँ

जब न देख पाया था तब तो नित ही आकर

मेरे सम्मुख सौगन्धो का ढेर लगाया

करता था ऐसा रीझा सा ।

किंतु वामना का तुषार वह उस प्रेमी का

ज्योही ताप हर्मिया की अनिष्ट छवि का पा

गया अचानक, पिघल गया वह,

सौगन्धो की वौछारे वे पिघल वह चली ।

डेमेट्रियस ! चलूँ उसके ही पास चलूँ मैं !

चलूँ ! हर्मिया भाग रही है, उसे बताऊँ ।

तब तो वह कल रात करेगा उसका पीछा

वन में जायेगा वह निश्चय,

हो सकता है हो कृतज्ञ वह मेरे प्रति भी

यह सूचना प्राप्त कर मुझसे ।

कितना मैं हगा मोल पडा है मुझको सचमुच ।

मेरी पीडा घनीभूत होकर समृद्ध हो,

उमे देख कर लौटूंगी मैं दुःखवद्ध हो ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वही । क्विन्स का घर]

[क्विन्स, स्नग, बौटम, पलूट, स्नाउट, और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

क्विन्स क्या हमारी सारी मडली यहाँ मौजूद है ?

बौटम आप सूची में एक-एक करके नाम पढ़िये न ?

क्विन्स यह रहीं सूची, सारे एथेन्स में ड्यूक और डचेस के सामने खेले जाने वाले रूपक को खेलने के लिये नितात योग्य समझी जाती है । हाँ उनकी शादी की रात को ।

बौटम अच्छे पीटर क्विन्स । पहले बताइये । रूपक में क्या है ? फिर अभिनेताओं के नाम पढ़िये, यो धीरे-धीरे बात पर आइये ।

क्विन्स हमारा रूपक है, बड़ा ही दुःख से भरा सुखात नाटक । पाइरैमस और थिस्वी की बड़ी दर्दनाक मौत होती है ।

बौटम वाह-वाह क्या बात है । बड़े जोर की रहेगी । अब अच्छे पीटर क्विन्स । जरा अपने अभिनेताओं की हाजरी लेलो । भाइयो, आजाइये यहाँ ।

क्विन्स अच्छा बोलता हूँ । हुकारी भरते जाइये । निक बौटम, वुनकर ।

बौटम हाजिर हूँ । बताइये मुझे कैसा और किसका पार्ट करना है ?

क्विन्स तुम निक बौटम, बनोगे पाइरैमस ।

बौटम पाइरैमस क्या है ? प्रेमी या अत्याचारी ?

क्विन्स प्रेमी, जो प्रेम में पागल होकर अपने आपको मार डालता है ।

बौटम तब तो असली अभिनय के लिये कुछ आँसुओं की जरूरत पड़ जायगी । अगर मैंने यह पार्ट किया तो दर्शकों की आँखें देखना । तूफान मचा दूंगा, देख लेना । लेकिन पार्ट तो मैं असली करता हूँ, अत्याचारी का । अरक्लीज का पार्ट तो कैसा जमता है कि

विल्ली के चिथड़े उडा दूँ ।

हिलती हुई क्रुद्धमान

भयमय घन चट्टान

होती हो कपमान

मुक्त मुक्त कर समस्त वदीगृह-द्वार,

शशि का रथ दीप्तमान

दूर से प्रकाशमान

दूर से ही सिरजमान

फिर मिटाये भाग्यवध जीवित मनुहार ।

क्या ऊँची बात है । हाँ जी अब बाकी अभिनेता ! यह तो अर-
क्लीज का जोम था, अत्याचारी का । प्रेमी तो विचारा बडा बोदा
होता है ।

क्विन्स फ्रान्सिस फ्लूट, धाँकनी बजाने वाला ।

फ्लूट हाज़िर हूँ पीटर क्विन्स ।

क्विन्स तुम थिस्वी बनोगे फ्लूट ।

फ्लूट थिस्वी क्या है ? घुमक्कड वीर योद्धा ?

क्विन्स नहीं । वह स्त्री है जिससे पाइरैमस प्रेम करता है ।

फ्लूट हे भगवान ! मुझे औरत न बनाओ । मेरी तो दाढी निकलने
लगी है ।

क्विन्स कोई बात नहीं । तुम चेहरा चढा लेना और जहाँ तक हो सके
कम बात करना ।

बौटम अरे मैं चेहरा छिपा लूंगा अपना । थिस्वी का भी पाटं कर लूंगा
मैं । मैं बड़ी दिलफरेब पतली आवाज में बोलूंगा—‘थिस्वी ।
थिम्बी ।’ ‘आह पाइरैमस । मेरे प्रेमी । मैं तेरी प्यारी हूँ, मैं तेरी
थिस्वी हूँ ।’

क्विन्स नहीं, नहीं। तुम पाइरैमस बनोगे, पलूट ही थिस्वी ठीक रहेगा।

बौटम अच्छी बात है। आगे चलिये।

क्विन्स रोबिन स्टारवेलिंग, दर्जी।

स्टारवेलिंग यह रहा मैं, पीटर क्विन्स।

क्विन्स रोबिन स्टारवेलिंग। तुम थिस्वी की अम्मा बनोगे। टौम-स्नाउट, ठठेरा।

स्नाउट हाज़िर हूँ, पीटर क्विन्स।

क्विन्स तुम पाइरैमस का वाप। मैं थिस्वी का वाप। स्नग, लुहार। तुम सिंह बनोगे। और मैं समझता हूँ, अब सब ठीक पार्ट बँट गये।

स्नग सिंह का पार्ट लिखा हुआ है? हो तो कृपा करके दे दे, मुझे देर में याद होता है।

क्विन्स तुम बिना तैयारी के बोल सकते हो। तुम्हें और कुछ नहीं करना, सिर्फ गरजना है।

बौटम मैं ही शेर का पार्ट कर लूंगा। मैं गरज लूंगा, ऐसा कि मर्दों का दिल दहल जाये। सच कहता हूँ ऐसा गरजूंगा कि ड्यूक न कह उठे—और गरजो। और गरजो।

क्विन्स और ऐसी जोर से गरजना, कि डचेस और सारी स्त्रियाँ डर जाये, चिटला उठें और फिर हम सबको मजे में फाँसी के फदे मिल जायेंगे, इनाम में।

सब सब लटक जायेंगे, औरत के जने सब।

बौटम दोस्तो। मैं जानता हूँ कि अगर औरतें डर गईं तो उनके पास हमें लटका देने के मिवाय कोई चारा ही नहीं रहेगा? लेकिन मैं अपनी आवाज़ ऐसे बढ़ाऊँगा और इतनी मुलायमियत

से गरजूंगा जैसे चिड़िया चहकती है और ऐसा गरजूंगा जैसे कोयल बोल रही हो ।

क्विन्स तुम सिवाय पाइरैमस के और किसी का पार्ट नहीं कर सकते, क्योंकि पाइरैमस सुन्दर आदमी है, एक अच्छा आदमी है, ऐसा जैसे ग्रीष्मऋतु होती है, एक बड़ा सुन्दर आदमी, एक भला-सा लगनेवाला आदमी । इसलिये तुम्हे ही पाइरैमस बनना है ।

बौटम अच्छी बात है, मैं बन जाऊँगा । अच्छा इसके लिये मैं कैसी दाढ़ी लगाऊँ जो सबसे ज्यादा जँचे ।

क्विन्स जैसी तुम्हारी मर्जी हो ।

बौटम तो मैं पीली दाढ़ी लगाऊँ या नारंगी रंग की छोटी-सी, या कुछ कत्यर्ड, या फ्रेञ्च वादशाह की-सी ? बिल्कुल पीली ।

क्विन्स बहुत-से तुम्हारे फ्रेञ्च वादशाहों के बाल ही नहीं होते और फिर तुम्हारा तो चेहरा खुला रहेगा । लीजिये भाइयो ! यह रहे आपके पार्ट । और मैं आपसे विनय करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ, विनती करता हूँ कि कल रात तक याद कर डालने सब, और प्रासाद के बग में मिले, नगर से एक मील दूर, चाँदनी में । वहाँ अपना रिहर्सल होगा क्योंकि अगर हम नगर में यह सब करेंगे तो नगरवासी कुत्तों की तरह मड़ली को घेर लेंगे, हमारी बातें जान जायेंगे, तब तक मैं नाटक के लिये जरूरी सामानों की सूची बनाता हूँ । देखिये । मेरी बात न मिट जाये ।

बौटम जरूर मिलेंगे हमलोग । वहाँ तो जम के रिहर्सल होगा, हिम्मत

से, खूब फोश तरीके से । तकलीफ पाओ, मगर कमाल करो ।
विदा ।

क्विन्स तो ड्यूक के ओक के पेड के पास मिलना पक्का
रहा ।

बौटम बस-बस ! काफी हुआ । कमान थाम के डोरी काट दो ।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[एथेन्स के पास का वन]

[अलग-अलग ओर से एक परी और पक का प्रवेश]

पक

परी

कहो परी । तुम कहाँ घूमती फिरती हो यो ।

• पर्वत, घाटी, वन, हरियाली,
अग्नि, लहर सब पर मतवाली,
मैं सर्वत्र घूमती रहती
चन्द्रकला से भी त्वर चलती ।
परियो की रानी की दासी
मैं हूँ चपला नहीं उदासी,
हरीतिमा पर सज्जित करती
नीहारो की झिलमिल रचती ।
पीले कुसुमों की छवियों में
रहते लाल बिंदु मुखरित से,
परियो को वे हैं अति भाते
मामल दल लगते पुलकित से ।
चलूँ कहीं नीहार ढूँढ लूँ,
कुसुम-कुसुम के कानों में अब
नटका दूँ मोती में उज्ज्वल,
विदा, विदा नो, जाती हूँ अब ।
ओ हे आत्मा ! समय पास है

परियो की रानी आयेगी
परियो से घिर कर आयेगी,
वेला उनकी बहुत पास है।

पक

• आज निशा तो परियो के राजा का रजक

उत्सव होगा कितु यहाँ पर,
इतना रखना ध्यान कि रानी आये नहीं दृष्टि में उसकी,
ओवेरोन क्रुद्ध है काफी,
क्योकि आजकल रानी के जो पास एक सेवक है उसका
सुन्दर बालक,
जिसे किसी भारत के राजा से है लाया गया चुरा कर,
ऐसा सुन्दर बाल चुराकर परियो ने जो बदल लिया है
अपना वाला वहाँ अरे ! रख
कभी न पाया ऐसा तो इस रानी ने था ।
ओवेरोन ईर्ष्यारत सा चाह रहा है बालक को वह
अपना सेवक स्वयं बना ले, ताकि भ्रमण करने में वन में
सग रहे वह ।

कितु नहीं तजती बालक को हठ कर रानी ।
उसे कुसुम कुङ्कुम का है श्रृ गार मनोहर करके
विहँसित स्वयं सजाती,
वह उसकी प्रसन्नता का आधार बना है ।

अब तो राजा रानी दोनों कभी नहीं कुञ्जों में मिलते
नहीं घूमते हरीतिमाओं की मोहक श्यामल छाया में
स्फटिक निर्भरो या तारों की मधुर ज्योति में
कभी न मिलते । उनमें रहता है भगडा ही,
वन प्रातर की परियाँ भय से जा कर फूलों में छिपती हैं ।

परी : या तो मैं पहुँचान नहीं पा रही तुम्हे हूँ,
 या तुम हो वह चतुर और चालाक बहुत शैतान
 चपलमन
 जो कहलाते रोविन सज्जन ! क्या तुम ही वह
 नहीं कि जो भयभीत किया करते हो यो ही ग्राम-
 युवतियाँ !
 दूध बिलोते या गृहकाजो में तुम उनको परेशान कर
 बहुत सताया करते हो न ?
 मदिरा में से फेन किया करते हो गायब,
 रात्रि पथियो को भरमाते, और हँसा करते हो तुम
 उनको भटका कर ?
 मधुर स्नेह से तुम्हे सभी 'पक' ही तो कहते,
 क्योंकि काम भी तो उनके तुम कर देते हो ?
 लाते हो सौभाग्य ! वही हो ना ? वोलो तो ?
 पक तुम कहती हो ठीक ! अरे मैं ही हूँ,
 मस्त निशाचर, सदा हँसाता ओवेरोन को,
 उसका एक विद्वपक, जब मैं
 खाये पिये मस्त कद्दावर घोड़े को भी हूँ भरमाता
 अरे हिनहिनाकर उठान घोड़ी के स्वर में ।
 कभी गप्प करती औरत के प्याले में मैं
 उबला हुआ केंकड़ा जैसा वन छिपता हूँ
 और पिया करती हूँ जब वह, तब मैं होठों से टकरा कर
 उमकी गर्दन में भूलती हुई उस मरियल मास-भूल पर
 भट शराव फैला देता हूँ ।
 बहुत चतुर चौकस चाची जो दुख से भरी कथा कहती है

कभी-कभी वह मुझे तिपाई समझ भूलती
 और सरकता मैं नीचे से, वह घडाम से गिर जाती है ।
 वह दर्जी को दोषी कहती, खॉसा करती,
 सब हँसते हैं कमर पकडकर हा हा ही ही,
 मस्त भूमते, 'ऐसावक्त कहाँ मिलता है,' सभी मानते ।
 किन्तु हटो अब परी । निहारो लो वह
 ओवेरोन आ रहा है अब ।

परी : मेरी वह स्वामिनी आ गई ! काश चला जाता यह
 राजा ।

[एक ओर से ओवेरोन और उसके सेवक तथा दूसरे ओर से अपने
 सेवकों के साथ टिटानिया का प्रवेश]

ओवेरोन आह चाँदनी का दुर्भाग्य मिल गई
 टिटानिया मानिनी हठीली ।

टिटानिया अरे ! मिले तुम ईर्ष्याग्रस्त अचानक आ कर
 ओवेरोन यहाँ पर ! परियो ! दूर रहो तुम !
 मैंने इनकी शैय्या, और सग दोनो को अपना
 वर्जित सा समझा है ।

ओवेरोन ठहरो ! अरे मदाघ चचले ! क्या मैं नहीं
 तुम्हारा स्वामी ?

टिटानिया तब तो मैं स्वामिनी रहूँगी जान रहे हो ?
 किन्तु मुझे है ज्ञात कि तुम हो परिस्तान से
 छिप कर निकले

कोरिन वन कर सारे दिन है तुमने नरकुल की वसी मे
 प्रेम गीत गुजारे हैं वासनामयी उस फिल्लीडा के हेतु
 रीझ कर ।

क्यों आये हो कहो डडिया के सुदूरतम मैदानों से ?
पर मत भूलो एमेजौन सुदरी, गमकती वह यौवन
से प्रिया तुम्हारी
जो ऊँचे जूते पहना करती है, अपने योद्धा प्रेमी
अरे थोसियस से ही उसका परिणय होगा । तुम आये हो
उनकी सुख समृद्धि को केवल हर्षित करने ।

ओवेरोन

टिटानिया । धिक्कार तुम्हें है ।
हिप्पोलिटा । खटकती है ऐसी नयनों में ?
अरे थोसियस से है प्रीति तुम्हारे मन में,
छिपी नहीं है मुझसे कोई,
पैरीजीनिया, जिससे उसने बलात्कार था किया अरे
नक्षत्रों की झिलमिल छायावाली रजनी में,
तुमने ही क्या नहीं दिखाया उसे मार्ग था ?
सुदरि ऐजल, एरिआदून औ' एन्टिओपिया
से तुमने ही उसके वचनों को झुंठलाया ।
जालसाजियाँ हैं यह केवल विद्वेषों की ।
हम वसत के मध्यकाल के बाद कभी भी
वन पर्वत घाटी कुञ्जों या सिंधु तीर पर
नहीं मिले हैं कहीं, पवन की गुजारों पर
लटे झुलाते ।

टिटानिया

अरे तुम्हारे ही झगड़े ने केलि हमारी में बाधा डाली
है ऐसी ।

इमीलिये तो गूँज गूँजकर व्यर्थ हमारे हेतु
एक प्रतिहिंसा भरकर
सुखा दिया है फेन सिंधु से, जो धरती पर

वरस-वरस कर बना गया है नदी नदी को कर समृद्ध
 ऐसा गर्वीला, उमड उमडकर देखो तो छा गई तीर के
 सब प्रदेश पर ।

अरे इसलिये व्यर्थ हो गया बैलो का वह श्रम यो
 जूआ ढोते ढोते

और किसान का स्वेद वह गया हाथ निरर्थक,
 पकने से पहले ही सारा अन्न सड गया,
 डूब गये है खेत हाथ से पौधे खोले खडे हुए है,
 कौए मृत पशुओं को खा कर मुटा गये है,
 नौ-नौ के दल मे जो नृत्य हुआ करते थे सुदर सुदर
 शवलित वस्त्र पहनकर
 कीचड से भर आज गये है,

पगडडियाँ सघन हरियाली की खोई है,
 अब चलता है कौन जो कि वे जानी जाये ।

मर्त्य चाहते शीतकाल है,
 किंतु रात मे अब सामूहिक गीत नहीं होते पवित्र है,
 बाढो की शासिका चद्रदेवी तब ही तो
 पीली पड कर महारोप से धोती सारी वायु, और
 गठिया की ही भरमार दीखती ।

वदल रही है ऋतुएँ सारी । वह तुपार सितशीश
 शीत है

मृदुल गुलाबो की गोदी मे जा गिरते है ।
 वृद्ध शीत के पतले हिमकिरीट पर गधित
 ग्रीष्मकाल के मधुर फूल, कलियो की माला
 दिखती है कैसा कठोर उपहास बनी सी ।

रे वसत, ग्रीष्मा, उत्पादक वह हेमत, शीत क्रोधी, सब
 यो अभ्यस्त वस्त्र अपने है बदला करते,
 और चमत्कृत लोक, वृद्धि से उनकी ऐसे,
 अब पहुँचान नहीं पाता है, कौन कौन है ?
 यह बुराइयो की परंपरा आती है अपने विवाद के
 कारण ही तो,

अपने मनमुटाव के कारण, हम है उनके जनक,
 मूल कारण है हम ही ।

ओवेरोन

आओ प्रायश्चित्त करो फिर इसका यह है हाथ तुम्हारे,
 अपने ओवेरोन प्राण को टिटानिया क्यों क्रुद्ध बनाये ?
 बदला हुआ एक वह बालक ही तो चाह रहा हूँ अपना
 सेवक प्रिये ! बनाने तुम से ।

टिटानिया

मन को करो शांत तुम अपने ।
 सारा परिस्तान भी बालक का तो मोल न दे पायेगा
 मुझको । इसकी माता
 मेरे ही पथ की एक थी वह उपासिका,
 गंधभरी इडियन वायु में कई निशाएँ
 बीती अपनी वाते करते बहुत लुभानी ।
 बैठी मेरे साथ अरे वह नैपच्यून की
 पाण्डुरसिकता पर अलवेली
 लहरो पर आते निहारते व्यापारीगण,
 जबकि मस्त भर पवन फुलाते पाल
 गर्भिणी के उदरो में, हम हँमती थी ।
 वह मधुरा तब तैर रही सी किये अनुगमन—
 (यह बालक उसके भीतर था जबकि गर्भ में)

नकल किया करती थी, धरती पर जहाज़ मी,
लौटा करता ज्यो यात्रा से, लदा हुआ वह

मूल्यवान वस्तुएँ लिये ज्यो ।

किंतु मर्त्य थी, इसीलिये जब डमे जन्म दे हाय मर गई,
उसके हित मैंने यह बालक पाल लिया है,
और उसी के हेतु नही छोड़ूंगी इसको,
इसका तो असह्य है मुझको सच वियोग भी ।

ओवेरोन

इस वन में कब तक रुकने का है विचार यह
कहो तुम्हारा ।

टिटनिया

यहाँ थीसियस के विवाह तक रुकने का विचार है मेरा,
यदि धीरज धर तुम भी नृत्य करोगे हमसे,
देखोगे ज्योत्स्ना में अपने आनन्दोत्सव, सग रहोगे,
और नही तो, छोड़ो मुझको, चली जाऊँगी
दूर तुम्हारी वास भूमि से ।

ओवेरोन

दे दो मुझको यदि वह बालक
सग तुम्हारे चला चलूँगा ।

टिटनिया

सारा परिस्तान भी दे दो, तो भी क्या है ?
परियो आओ । व्यर्थ ठहरना है अब अपना ।
आओ चल दें ।

[टिटनिया का सेविकाओं के साथ प्रस्थान]

ओवेरोन

जाओ जाओ । किंतु कुञ्ज से देखूँ कैसे जाती हो तुम
जब तक इस कटु तिरस्कार का बदला लेता
नही अभी मैं ।

प्यारे पक, तुम सुनो । याद है एक बार मैं
बैठा था जब अतरीप पर

एक वहाँ पर मत्स्य-अगना
वैठी सागर की मछली पर
ऐसे मीठे स्वर से गाती थी विभोर कर
भीषण सिंधु गीत सुन उसका भूम गया था शात
हुआ था ?

टूट गये थे पागल हो कर तब कुछ तारे
मत्स्य-अगना का सुनने को गीत सुरीला ।

पक
ओवेरोन

मुझे याद है ।
मैंने देखा था उस क्षण ही,
तेरा ध्यान नहीं था उस पर,
शीतचन्द्र औ' पृथ्वी के इस अतराल मे
उडते-उडते सज्जित मन्मथ ने बाँधा था अपना लक्ष्य
ध्यान से

एक कुमारी पर पश्चिम मे वैठी थी जो,
अपने धनु से प्रेम-वाण वह छोड़ दिया था उसने
उस पर ।

वह शर था कि वेध देता लाखों हृदयों को
मन्मथ का ज्वलत शर था वह, पर मैंने तो
देखा वह वुझ गया पनीले शशि की निर्मल पूत
रश्मियों मे भीगा सा ।

वह विभान्विता उपायिका निश्चल चित्त मे
रही लीन ही, था कौमार्य भाव यो व्यापा
मुक्त कल्पना ।

देखा मैंने जहाँ गिरा था सर मन्मथ का
एक पश्चिमी मृदुल कुसुम पर गिरा हुआ था,

जो पहले था दुग्ध श्वेत वह
 प्रेम-घाव के कारण अब हो गया वैगनी,
 कुमारियाँ उसको पुकारती हैं — 'आलस का प्रेम'
 नाम दे ।

मुझको ला दो वही फूल तुम, तुम्हे दिखा मैं स्वयं
 चुका हूँ उसका पौधा एक बार हों ।
 उसका मधु यदि सोती पलको पर थोड़ा सा
 आँजा जाये

पुरुष या कि स्त्री, नयन खुले जब जिसको देखे
 उस पर ही तन मन से होवे झट न्यौछावर ।
 लाओ वह वूटी तुम मुझको, जल्दी जाओ,
 भीम पोत सागर में योजन भर न चल सके
 उससे पहले ही आ जाओ ।

पक

मैं चालीस मिनट के भीतर सारी धरती
 की परिक्रमा करके आता हूँ बस देखे ।

[प्रस्थान]

ओवेरोन

एक बार वह मधु पा जाऊँ ।
 देखूंगा टिटानिया जा कर सोती है किस जगह, वही बस
 जा कर उसके नयनों में उसको डालूंगा ।
 नयन खोलते ही जिसको देखेगी, तब वह
 सिंह, भेड़िया, बैल, नकलची बदर या लगूर भले ही,
 पीछे दौड़ेगी वह उसके भरे प्रेम आत्मा में अपनी ।
 जड़ी और है एक पाम मेरे जिससे मैं इसकी शक्ति
 हटा सकता हूँ,
 मैं उसका बालक ले लूंगा ।

अरे कौन आ रहा यहाँ है ? मैं अदृश्य हूँ
सुन लूँ मैं इनकी बातों को ।

[डेमेट्रियस का प्रवेश, पीछे हेलेना]

डेमेट्रियस

तुमसे प्रेम नहीं करता मैं, इसीलिये तुम
मेरा पीछा करो न ऐसे ।

लाइसेन्डर है कहाँ ? कहाँ सुदरी हर्मिया ?

मारुंगा मैं आज एक को, और दूसरी मुझे मारती है
वह निष्ठुर !

तू कहती थी वे दोनों वन में आये हैं यहाँ भाग कर ।

अरे यहाँ हूँ मैं इस वन में, पागल हूँ अब,
मुझे नहीं दीखती हर्मिया ।

अरी चली जा दूर चली जा, मत आ पीछे ।

हेलेना

ओ निष्ठुर पाषाण हृदय ! मत मुझे हटाओ ।

वयो न खींचते खड्ग लौह का तुम बतलाओ ।

मेरा मन भी इस लोहे में ही सच्चा है,
स्वयं खींचते हो तुम मुझको दोष न मेरा,
आकर्षण की शक्ति छोड़ दो मेरे प्रियतम,
मैं भी यह अनुगमन-शक्ति तब छोड़ूंगी हाँ,
नहीं हाय कुछ भी मेरे वश ।

डेमेट्रियस

क्या मैं तुझे रहा बहलाता ?

क्या मैं तुझमें कोई प्यारी बात कह रहा ?

क्या न स्पष्टतम शब्दों में कहता हूँ तुझसे

तुझे नहीं करता, कर सकता तनिक प्यार मैं ।

हेलेना

: इसीलिये तो अधिक प्यार करती हूँ तुमको ।

मैं कुत्ता हूँ प्राण ! तुम्हारा, सग चलूंगी ।

हे डेमेट्रियस ! जितना तुम मुझको मारोगे
 उतना मेरा प्यार उमड़ तुम पर आयेगा ।
 कुत्ता जैसा समझ मुझे तुम रख लो प्रियतम !
 मारो, कूटो, तिरस्कार कर दो, खो डालो,
 केवल इतनी मुझे छूट दो, पीछा मैं कर सकूँ तुम्हारा ।
 सचमुच मैं अयोग्य हूँ, इतना मुझे ज्ञात है ।
 आह प्रेम मे प्राण ! तुम्हारे और निम्न क्या
 माँगूँ तुमसे,

डेमेट्रियस

पर मेरे तो लिये यही बहुत सम्मान मान है,
 क्या अपने कुत्ते की भी तुम मुझे जगह दे नहीं सकोगे ?
 मेरी आत्मा की कठोर यह धृणा नहीं तुम
 उकसाओ अब अधिक और हाँ !
 तुम्हे देख कर ही मिचली सी मुझको आती ।
 घबरा जाता हूँ मैं क्षण में ।

हेलेना

मैं भी क्षण में घबराती हूँ जब न देखते हो तुम
 प्रियतम !

डेमेट्रियस

अपनी लज्जा को इतना आतुर न बनाओ
 दोषों से भर ।

नगर त्याग कर, आई हो तुम उसके पीछे
 जो न तनिक भी तुम्हे प्यार करता है फिर यह
 समय रात का, निभूत विजन है,
 और तुम्हारे पास जानती हो क्या क्या है ?
 है कौमार्य अमोल ध्यान भी इसका आता ?
 सज्जनता गुण प्राण ! तुम्हारे
 है, सर्वाधिकार मेरे ही ।

हेलेना

जब मैं देखा करती प्रियतम वदन तुम्हारा
रात नहीं रहती आँखों में ।

मुझे नहीं दिखता अधियार ।

इस वन में भी मुझे नहीं लगती निर्जनता ।
मेरे-ते-ससार अकेले तुम ही तो हो ।

कहो अकेली कैसे हूँ फिर वो लो प्रिय । मैं ?
 मेरा सारा विश्व देख तो रहा मुझे है ?

डेमेट्रियस अरी भाग कर तुमसे जाऊँ, सघन भाडियो में ही
 छिपना मुझे पड़ेगा ।

हेलेना तुम्हें हिंस्र पशुओं की करुणा पर छोड़े जाता हूँ ले अब ।
 : अरे कौन है अधिक हिंस्र तुमसे यह वो लो ।

भले छोड़ जाओ जब चाहो,
 बदलेगी यह कथा स्वयं ही,
 भाग रहा है आह अपोलो, डैफने करती है अनुधावन,
 कैरा घेरे चली ग्रिफिन को, मृगी सिंह को, और भीरुता
 को निहार कर पौरुष भागा ।^१

डेमेट्रियस अब न प्रश्न का उत्तर दूंगा तेरे कोई,
 जाने दे तू मुझको अब तो ।
 यदि पीछे आयेगी तो सुन
 मत कर तू विश्वास सोच ले
 कानन में मैं तेरे सग करूँगा निश्चय ही

१ अपोलो सूर्य, डैफने ऊँस (वैदिक संस्कृत—दहना) । ग्रीक कथा है, सूर्य ऊँस का अनुधावन करता है । ग्रिफिन एक काल्पनिक जन्तु है, जिसका शरीर और पंजे शेर के समान और चोंच और डंठल पक्षी जैसे माने जाते हैं ।

हेलेना

दुष्कर्म जान ले ।

मंदिर, नगर, खेत सब मे क्या तुमने भला किया है ?

ओ धिक्कार तुम्हे है डेमेट्रियस सुनो तुम !

पाप तुम्हारा है कलक नारी जीवन पर ।

हम न प्रेम के लिये युद्ध कर सकती निश्चय,

जैसे पुरुष हाथ कर सकते ।

हमसे प्रेम किया जा सकता है पर हम तो

प्रेम नहीं कर सकती सचमुच ।

[डेमेट्रियस का प्रस्थान]

आऊँगी मैं तेरे पीछे, और नरक को स्वर्ग बनाऊँ,

जिन हाथों से मुझे प्रेम है

उन्से ही मैं आज मरूँगी ।

[प्रस्थान]

ओबेरोन

विदा, अरी ओ ! इससे पूर्व कि तजे कुञ्ज वह

तू उसको पा, फिर वह तेरा

प्रेम स्वयं माँगेगा झुक कर ।

[पक का पुन प्रवेश]

ओ यायावर ! तुझे मिल गया वता फूल वह ?

हाँ, यह है तो ।

पक

ओबेरोन

ला ला । मुझको दे तुरन्त तू !

मुझे ज्ञात है एक तीर वह जहाँ जगली

फूल उग रहे,

रग विरगे कुसुम जहाँ भूला करते है,

छायावाली सघन-सघन हरियाली सब पर मीठी मीठी

स्निग्ध उनीदी छाया करती,

और गुलाबों की भीरी से गंध महकती,
सुंदर-सुंदर कुसुम जहाँ पुलकित होते हैं ।
वही रात को टिटानिया है कभी-कभी सोती फूलों में
नृत्य और आमोदों में विश्रांत शिथिल हो ।
वहाँ साँप केचुली चाँदियों सी चमकीली

छोड़ा करते,

इतनी बड़ी कि किसी परी के लिये बने
परिधान पूर्ण वह ,

इसके मधु को मैं उसके नयनों में आँजुं,
घृणित कल्पनाएँ जाग उठेंगी ।

ले तू भी कुछ । और कुञ्ज में तनिक ढूँढ तू

एक सुंदरी है एथेन्स नगर की कोई

पड़ी प्रेम में घृणापूर्ण कटु हृदय किसी

दुर्दात युवक के ।

तू ले जा श्री' उसी युवक के नयनों में यह
मधु थोड़ा सा तुरत लगा दे,

ऐसी बेला किंतु देखना,

तभी लगाना मधु जब अगले

ही क्षण युवक युवति को देखे ।

युवक अरे तू पहुँचानेगा देख वस्त्र उसके
एथेन्स के ।

मुन्दरि उसमें बहुत प्रेम करती है सुन ले,
ऐसा करना युवक अधिक ही करे प्रेम उस
युवती में भी ।

पहली बाँग भोर में दे जब ताम्रचूड़, तू

उससे पहले ही आ कर के मुझसे मिलना ।
 पक प्रभु ? विश्वास करे, सेवक यह यही करेगा ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वन का अन्य भाग]

[टिटानिया अपनी परी (परी शब्द स्त्री और पुरुष दोनों का वाचक मानना चाहिये, क्योंकि अगरेजी में इसे दोनों के लिये माना जाता है।) साथियो, सेवको के साथ प्रवेश ।]

टिटानिया आओ एक नृत्य हो जाये भूम-भूम कर
 घूम-घूम कर, और एक गाना परियो का,
 तब क्षण भर हम गधित मृदुल गुलाबो के
 कीटो को मारे,
 और करे चमगादुर ने सग्राम छीन लेने को उसके
 चर्म पख, उसके वे जिनसे मेरी प्यारी
 छोटी परियो को मिल जाये कोट पहनने को
 कानन मे,
 कोलाहल करते उल्लू को हटा हटा दे पीछे पीछे,
 जो कि हमारे विचरण से हो आश्चर्यान्वित
 रात रात भर बोला करता है डरावना ।
 गाओ लोरी, मैं सोऊँगी ।
 फिर तुम अपने लगे काम मे
 और मुझे करने दो तुम विश्राम शान्ति से ।

[गीत]

एक परी ओ रे रग विरगे चचल

दो जिह्वा के नाग
अरी सेहियो, गोह, छुछूंदर,
जाओ जाओ भाग,
सोती है परियो की रानी
करती है विश्राम
उसके पास न आना कोई
वन कर स्वप्न-विराम
[समवेत गीत]

लोरी गा,
कोकिले ! मद भीठे सुरीले मधुर
राग से वायु में प्रीति तू आज भर
लोरी गा !

कर नही हानि तू, कर न जादू अरी,
सो रही सुन्दरी नीद से है भरी
लोरी गा !

मूंद ले तू नयन अब विदा, अब विदा
स्वप्न में मुख मिले प्यार जागे सदा,
लोरी गा !

[गीत]

एक परी

जाला वुनने वाले मकड़े
यहाँ न आना पास,
वुनकर मकड़े लवे डग धर
यहाँ न लेना श्राम ।
काली मक्खी, पास न आना

घोघे रहना दूर ।
 कीट पतंगो ! यहाँ न ऊधम
 करना, रहना दूर ।
 [समवेत गीत]

लोरी गा ।

[इत्यादि]

दूसरी परी

अब सब कुछ है ठीक
 चलो अब दूर हटो सब ।
 प्रहरी बन कर एक रहे औ'
 शेष हटो सब ।

[परियों का प्रस्थान । टिटानिया सोती है । ओबेरोन
 का प्रवेश और वह टिटानिया की पलकों पर
 फूल को निचोड़ देता है ।]

ओबेरोन

जब तू जग कर देखेगी, जो दृष्टि पड़ेगा
 उससे ही होवेगा रानी । प्रेम तुझे भट,
 उसके ही हित तडपन तुझमें पैदा होगी,
 वह कुछ भी हो, वित्ली, भानू चीता या फिर
 कड़े वाल वाला सूअर जगली भयद ही ।
 जगते ही यदि तेरे वह सामने दिखेगा
 उमड़ेगा तुझमें तब गहरा प्यार बड़ा ही ।
 जब हो कोई अधम जीव मन्त्रिकुट तभी तू
 जगना, उसके गहन प्रेम में तू पड़ जाना ।

[प्रस्थान]

[लाइसेन्डर और हर्मिया का प्रवेश]

लाइसेन्डर

प्रिये, हो गई आत हाथ कानन में चलते ?

सच तो यह है, राह गया हूँ भूल यहाँ मैं ।
अहे हर्मिया ! आओ कुछ विश्राम करे हम, कहो
ठीक है ?

हर्मिया

दिन की थकन मिटा ले आओ हम कुछ वेला ।
हाँ लाइसेन्डर ! यही ठीक है । शैय्या रच लो तुम
अपने हित,

लाइसेन्डर

मैं तो इस तट पर सिर धर कर अब लेटूंगी ।
यही दूव होगी प्रिय, हम दोनों का तकिया,
एक हृदय, शैय्या भी अपनी एक, वक्ष दो,
किंतु सत्य विश्वास एक ही ।

हर्मिया

नहीं ! प्राण लाइसेन्डर ! मेरे हित यह मानो
इतने पास अभी मत लेटो, रहो दूर कुछ ।

लाइसेन्डर

प्रिये ! शुद्ध मन है मेरा यह तुम पहुँचानो ।
आह प्रेम सगीति प्रेम तात्पर्य धारती ।
मैं कहता हूँ मेरा मन अब उलझ चुन गया
कितना प्रिये ! तुम्हारे मन से ।

अब तो यह है एक हृदय ही ।

दो है वक्ष शृ खला में बँध गये एक ही पूत शपथ की ।

दो है वक्ष किंतु है उनका मत्य एक ही ।

अपने पास मुझे मोने दो, अब मत रोको,

आह हर्मिया ! यह लेटना असत्य न होगा ।

हर्मिया

आह चतुर वाते करते हो तुम लाइसेन्डर !

मेरा गर्व और आचार मकल क्या बोलो

क्या कह सकती लाइसेन्डर मैं भी अनत्य है ।

मीन मुहाने ! प्रेम और दाक्षिण्य दूर ही तो रहते हैं,

मानव लज्जा में वियोग यह कुमारिका का

सद्गुण ही है,

है कुमार का भी तो गुण ही, यो रहे दूर हम।

मेरे प्रियतम ! अब सो जाये।

प्रेम तुम्हारा इस सुंदर जीवन के अंतिम छोर तलक तो

मिट न सकेगा !

लाइसेन्डर

हो तथास्तु इस सुंदर प्रार्थना पर हे वाले !

हो जीवन का अंत वही अब अंत सत्य-विश्वास-प्रेम का

होवे प्रेयसि !

यह है मेरी शैय्या ! अरी निंदिया मेरी

सुमुखि हर्मिया को दे मीठी शांति मधुरतम ।

इस प्रार्थी के नयनों को आ नींद सलोनी

शुभ कामना वांट कर दे दे, और सुला दे ।

[दोनों सोते हैं । एक का प्रवेश]

एक

ढूँढ़ चुका मैं सारा कानन

वह एथेन्स निवासी मुझको दिखा न पल क्षण,

जिसके नयनों पर है मुझको मधुर कुसुम का

रस डालना कि उसका प्रेम जगे भट उभड़ा ।

रात और निस्तब्ध है, है ? ये यहाँ कौन है ?

यह एथेन्स के वस्त्र पहन लेटा विमौन है,

यही यही है, जिसको मैं प्रभु की आज्ञा से

ढूँढ़ रहा था, यही यही है तिरस्कृता उसकी वाला रे

दोनों गहरी नींद सो रहे गँदली भू पर ।

केवल है आकाश विजन इन दो के ऊपर

सुन्दरि वाला ! साहस इतना भी न कर सकी

सोती निठुर पिया के बिल्कुल पास मस्त सी ।
 यह दाक्षिण्य विहीन और निष्ठुर है कितना,
तो ले कुसुम ! मिटा दे इसका यह कटु बनना,
 अपनी सारी शक्ति लगा दे जादू कर दे,
जब यह जागे इसको तू परिवर्तित कर दे,
 जागे, पलके खुले, दृष्टि जब पड़े प्रिया पर,
 पलको पर से प्रेम उतर कर मिले विहँस कर ।
 जब मैं जाऊँ तभी जागना,
 मुझको ओवेरोन निकट अब जल्दी जाना ।

[प्रस्थान]

[डेमेट्रियस और हेलेना का भागते हुए प्रवेश]
 आह प्राण तुम मुझे मार कर ही जो जाओ ।
 मैं कहता हूँ, सावधान अब
 और न कर तू पीछा मेरा ।

हेलेना क्या तुम मुझको अधिकार से छोड़ जाओगे,
 हाय न ऐसा करना प्रियतम ।

डेमेट्रियस : अपने ही साहस पर रह तू । मैं तो अब से
 देख अकेला ही जाऊँगा ।

[प्रस्थान]

हेलेना आह दौड़ते हुए इस तरह पीछे पीछे
 मैं हूँ थकी हुई कितनी हा,
जितनी विनती की उतना ही पाया मैंने तिरस्कार है।
 अरे हमिया कितनी है सौभाग्यशालिनी,
 भले कही वह रहे, क्योंकि है
उसके नयन बहुत आकर्षक मोहक उज्ज्वल !

कैसे है वह ! क्या खारे आँसू उनको ऐसा करते हैं ?
 मेरे भी तो नयन अश्रु से वहत धुले हैं ।
 नहीं नहीं, मैं तो कुरूप हूँ जैसे भालू ।
 जो मिलते हैं जतु मुझे वे डरे हुए से
 भाग भाग जाते हैं कैसे !

क्या आश्चर्य कि डेमेट्रियस भी भागा जाता
 मेरी उसे उपस्थिति इतनी अप्रिय लगती,
 जैसे दैत्य देख कर सब हैं विजका करते ।
 ओ दुरन्त अति क्रूर नीच दर्पण वह मेरा
 जिसने मुझको सुघर हर्मिया के सुन्दर उज्ज्वल
 नयनों से

अपनी तुलना करने का साहस दे डाला ।
 पर यह कौन यहाँ है ? लाइसैन्डर धरती पर ।।
 मृत है ? या है सुप्त ! नहीं है रक्त यहाँ पर,
 नहीं घाव है,
 लाइसैन्डर यदि जीवित हो तुम, तो फिर जागो !

लाइसैन्डर

(जाग कर) अहा तुम्हारे लिये अग्नि में भी चलने में
 भीत न होऊँगा मैं प्रेयसि !

आह हेलेना ! तुम सौंदर्य पारदर्शी हो ।
 प्रकृति कला का नमत्कार तुम में दिखलाती ।
 अरे तुम्हारे वक्ष मधुर में से मुझको है हृदय तुम्हारा
 स्पष्ट दीखता ।

डेमेट्रियस कहाँ है ? वो तो वह जघन्य है
 मेरी यह तलवार-धार पर कट जाने के ही लायक वह !
 कहो नहीं ऐसा लाइसैन्डर ! ऐसा निश्चय,

हेलेना

क्या है यदि हमिया तुम्हारी उसको प्रिय है ?
फिर भी तो हमिया प्यार करती है तुमसे,
 यही नहीं क्या बहुत कि तुमको शांति दे सके ?
 अरे हमिया को जाने दो ।

लाइसेन्डर

इसके सग वितायें क्षण से ऊब गया मैं ।
 मुझे हमिया नहीं, प्रेम है तुमसे मेरी सुघर हेलेना ।
 तर्कों से मनुष्य की इच्छा डोला करती,
 पर ऋतु आने के पहले फल कब पकता है ?
 अब तक मैं था अपरिपक्व, अविवेकी सचमुच,
 अब जो मुझ में वृद्धि आ गई,
 मैं उचितानुचितों का हूँ यह जान पा गया,
 प्रिये तुम्हारे नयनों की ही ओर ठेलता
 जाता है मुझको विवेक तो,
 नयन तुम्हारे । आह प्रेम की सुन्दर पुस्तक से
 समृद्ध है—

मुझे दीखती उनमें कितनी मीठी मधुर
 प्रेम की गाथा ।

हेलेना

क्या इतने कटु व्यग्र और विद्रूप हेतु ही
 हुआ जन्म या मेरा बोली ।
 क्या मैंने है किया कि तुमने इतनी घृणा हाथ बरसाई
 मेरे ऊपर ।
 क्या यह ही है नहीं हाथ काफ़ी मुझको, हाँ काफ़ी मुझको
 डेमेट्रियस स्नेह से मुझको नहीं देखता, हाथ नहीं
 देखेगा मुझको,
 क्या मेरे अभाव की तुमको भी निर्मम कचोट

करनी है ?

हे भगवान ! शपथ है ! यह अन्याय गहन है,
कैसी घृणा प्रेम के छद्मों में प्रगटी है,
विदा, सत्य कहती हूँ जब तुम विवश कर रहे
मैंने समझा था तुमको सज्जन विनम्र ही ।
आह ! हाय मैं तिरस्कृता जो एक पुरुष की,
पुरुष दूसरा मुझसे है उपहास कर रहा ।

[प्रस्थान]

लाइसैन्डर • उसने है हर्मिया न देखी । अरी हर्मिया तू सोती रह,
अब लाइसैन्डर के समीप तू कभी न आना ।
मिष्टान्तों की अति भी तो है अरुचि जगाती
नास्तिकता है जैसी अपनी घृणा जगाती,
मैं भी तुझ से घृणा, घृणा करता हूँ अब तो ।
जो कुछ शक्ति प्रेम तुम पर था अब वह सारा
हेलेना पर जा केन्द्रित हो, वह मेरी हो ।

[प्रस्थान]

हर्मिया (जाग कर) मुझे बचाओ लाइसैन्डर ! तुम मुझे
बचाओ !

मेरी छाती पर यह देखो साँप चढ़ रहा, इसे हटाओ ।
हेरी करुणो ! वह सुपना था । लाइसैन्डर ! देखो
मैं अब तक

काँप रही हूँ, मुझे लगा था साँप हृदय खाता था मेरा
और मुझे मरते निहार तुम निष्ठुरता से मुस्काते थे ।
लाइसैन्डर । है, यहाँ नहीं हो । लाइसैन्डर ।

स्वामी ! क्या अब तुम

सुन न रहे हो ? चले गये हा ! शब्द नहीं, ध्वनि
 हीन, बात तक कही न मुझसे ?
 अरे कहाँ हो ? बोलो बोलो ! सुन न रहे हो ?
 उन प्रेमो की याद करो कुछ ! हाय भीत में
 मूर्च्छित होती ।
 नहीं ! नहीं तुम पास स्पष्ट मैं देख रही हूँ ।
 प्राण ! मृत्यु या तुम्हे शीघ्र ही पा लूंगी मैं ।
 [प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[वन । टिटनिया सो रही है । क्विन्स, स्नग, वोटम, पलूट,
स्नाउट और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

वोटम क्या हम सब आ गये ?

क्विन्स अरे वाह ! क्या लाजवाब जगह है रिहर्सल करने के लिये ।

यह हर-भरा मैदान—छोटा-सा—हमारा रंगमंच होगा, यह झाड़ी
हमारा नेपथ्य, अब ऐसा ही कर डाले जैसे ड्यूक के सामने ही
करना है ।

वोटम पीटर क्विन्स

क्विन्स क्या है वकवकिया वोटम ?

वोटम पाइरैमस और थिस्वी के मुखान्त नाटक में कुछ ऐसी चीजे
हैं जो कभी अच्छी नहीं लग सकती । पहले तो पाइरैमस इसमें
आत्महत्या करने को तलवार खीचेगा जिसे बड़े घरानों की स्त्रियाँ
विलकुल वर्दाश्त नहीं कर सकेंगी । इसका जवाब दो ।

स्नाउट माता मेरी की सौगंध ! बड़ा डरावना रहेगा ।

स्टारवेलिंग मैं समझता हूँ कि मौत को हटा दिया जाये जब सब
काम हो जाये ।

वोटम अजी बिल्कुल नहीं । मैं बनाऊँ तरकीब, सब ठीक हो जाये ।
एक प्रारम्भिक वक्तव्य कविता में लिखा जाये जिसमें यह कहा जाये
कि हम अपनी तलवारों में कुछ नुकसान करना नहीं चाहते और
पाइरैमस नहीं मरा, बल्कि ज्यादा तसल्ली दे देने के लिये, उनसे

कहा जाये कि मैं पाइरैमस असल में पाइरैमस नहीं हूँ, बल्कि
बौटम—वनकर हूँ और इससे उनका डर दूर हो जायेगा।

क्विन्स ! अच्छी बात है। वक्तव्य लिखा जायेगा और उसे आठ और
छ चरण वाले छद में लिखा जायेगा।

बौटम नहीं दो और बढ़ा दो। आठ और आठ कर दो।

स्नाउट अच्छा स्त्रियो को शेर से डर नहीं लगेगा ?

स्टारवेलिंग मुझे तो इसका बड़ा डर है, यकीन मानना।

बौटम भाइयो ! कलाकारो ! आपको आखिर खुद भी तो कुछ
सोचना चाहिये। भगवान बचाये, औरतो में एक शेर को ले
आना, कितनी भयानक चीज है। भला जीते-जागते शेर से ज्यादा
डरावना क्या होगा। ऐसा करना तो बड़ा खौफनाक जुर्म है।
हमें इस पर जरूर ध्यान देना चाहिये।

स्नाउट : तब एक वक्तव्य इसका भी जोड़ दिया जाये जिसमें कहा
जाये कि वह शेर नहीं है।

बौटम नहीं, तुम्हे उसका नाम बताना चाहिये, बल्कि अभिनेता का
आधा चेहरा भी शेर की गर्दन में से दीखता रहना चाहिये और
उमे खुद बोलना चाहिये कि 'देवियो ' या 'सुंदर देवियो, मैं
अनुनय करता हूँ', या 'मैं निवेदन करता हूँ', या 'मेरी प्रार्थना
सुनिये—डरिये नहीं, काँपिये नहीं, आपकी जान के लिये मेरी जान
हाज़िर है। अगर आप यह समझती हैं कि मैं यहाँ शेर बनकर
आया हूँ, तो इसमें बढ़ कर अफमोस की बात मेरे लिये और क्या
होगी ? नहीं, मैं ऐसी कोई चीज नहीं हूँ, मैं तो औरों की तरह
ही एक आदमी हूँ।' और वम उस वक्त उमे अपना नाम बताना
चाहिये। नाफ-भाफ कह दे, मैं हूँ स्नाउट—नुहार।

क्विन्स ठीक है, ऐसा हो जायगा। लेकिन दो मुश्किलें हैं। वह यह कि

चाँदनी को भीतर कमरे में लाना है क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि पाइरैमस और थिस्वी की मुलाकात चाँदनी में हुई थी। स्नाउट जिस रात हम नाटक करेंगे उस दिन चाँदनी निकलेगी ? वौटम कैलन्डर लाओ कैलन्डर। पञ्चाङ्ग में देखो। चाँदनी को ढूँढो।

चाँदनी को ढूँढो।

क्विन्स हाँ, उस रात चाँदनी छिटकेगी।

वौटम तब तो एक खिड़की बना दी जायेगी जिसमें से चाँदनी आ जायेगी। उसे खोल देगे।

क्विन्स या फिर एक काम किया जाये। एक कँटीली भाड़ी और लालटन ले कर एक आदमी आ जाये और कह दे कि वह चाँदनी बन कर आया है। अच्छा अब दूसरी परेशानी सुनो। हमें बड़े कमरे की दीवाल भी चाहिये। क्योंकि कहानी में पाइरैमस और थिस्वी उस दीवाल के छेद में से बातें करते हैं उधर खड़े हो कर। स्नाउट दीवाल तो तुम कभी ला ही नहीं सकते। क्या राय है वौटम।

वौटम किसी आदमी को ही दीवाल बनना पड़ेगा। उस पर कुछ पलस्तर चढ़ा रहे, कुछ चूना, कुछ अनगढपन हो, ताकि वह दीवाल-सा लगे। वह अपनी उँगलियाँ ऐसे रखे और उनके छेद से पाइरैमस और थिस्वी बातें कर लेंगे।

क्विन्स अगर यह हो गया, तो सब ठीक है। आओ बैठे, हर माई का लाल आये। चलो रिहर्सल कर ले। पाइरैमस ! तुम शुरू करो। जब तुम अपनी बात खतम कर चुको तो उस भाड़ी में घुम जाना, ऐसे ही हर एक करना।

[पीछे से पक का प्रवेश]

पक अरे कौन है ये उजड़ु शेखी भरते यो
 परियो की रानी की गैय्या के समीप ही ?
 अच्छा ! तो नाटक होने की तैयारी है !
 तब मैं इसकी जाँच करूँगा,
 अगर जरूरत समझूँगा तो बन जाऊँगा
 अभिनेता भी ।

क्विन्स • वोलो पाइरेमस ! थिस्वी ! खड़ी हो जाओ इधर ।
 बौटम • थिस्वी ! गधायमान यह मधुर कुसुम •
 क्विन्स गधायमान ! गधायमान !
 बौटम • गधायमान यह मधुर कुसुम, प्रेयसि ऐसी
 है साँस तुम्हारी हे थिस्वी !
 यह कैसी ध्वनि ! है ? सुनो ! अरे
 मैं आता हूँ लो दो क्षण में •
 आता हूँ देखो अभी अभी

[प्रस्थान]

पक • कभी न आया यहाँ कभी ऐसा पाइरेमस ••
 लाजवाब है

[प्रस्थान]

फ्लूट अब मुझे बोलना है ?

क्विन्स हाँ जी, तुम्हें ही । पर यह समझ लो कि बाहर कोई आहट
 हुई है, वह उसे देखने भर गया है और अभी आ जायेगा ।

फ्लूट ओ पाइरेमस ऊर्जस्वित यौवन गरिमामय,
 अरे श्येन अति भव्यकुसुम से ज्योतिष सुदर
 जैसे किमी कटौली दुर्गम भाड़ी पर गुलाब हो कोई,

कितना यौवन यह उन्नद्ध । यहूदी हे उपनाम बना ज्यो
सुदर गोभित ।

घोड़े जैसे वफादार, जो कभी न थकता,
तुम्हे मिलूंगा पाइरैमस ! फिर
मैं निन्नी की उस समाधि के पाम

क्विन्स : निन्नी नहीं निनस । क्या यार तुम ? यह अभी से क्यों बोल
गये ? यह तो तुम्हे पाइरैमस को जवाब देना है । तुम तो अपना
सारा पार्ट एकदम बोल पड़े । यह नहीं देखा कि यह सवाद
कितने टुकड़ों में है और दूसरे के वाक्यों का आखिरी शब्द भी
आपने अपने वाक्य में ही जोड़ डाला । पाइरैमस आता है, तुम्हारी
बात खतम होती है—बस थकता पर ।

पलूट ओह !

अच्छे से अच्छे घोड़े-सा जो न कभी भी सचमुच थकता ।

[पक का पुनः प्रवेश । सग में बोटम हैं, पर अब उसके कंधों
पर उसका सिर नहीं गधे का सिर है ।]

बोटम सुदर थिस्वी ! यदि मैं मैं हूँ, तो केवल मैं तो तेरा ही हूँ ।

क्विन्स : भयानक ! भूत ! अद्भुत ! पिशाच आ गया ! भाइयो
भागो ! बचाओ ! बचाओ !

[क्विन्स, सग, पलूट, स्नाउट और स्टारवेलिंग का भागना]

पक किंतु करूँगा मैं तो पीछा अभी तुम्हारा
दौड़ाऊँगा तुम्हे खूब मैं, दलदल, झाड़ी
झाड़, फॉम में,

१ वाइविल में वर्णित निनैव नगर का क्विदन्तियो में वर्णित निर्माता,
बैबिलोन की रानी सेमीरैमिस का पति ।

कभी बनूंगा घोडा, कभी शिकारी कुत्ता, सूहर,
 या भालू मैं बनूँ निमुण्डा, आग कभी मैं,
 हिनहिनाऊँगा, फिर भौकूँगा, ग्रन्ट करूँगा,
 गरजूँगा या मैं धधकूँगा क्रमश
 घोडा, कुत्ता, सूहर, भालू, अग्नि बना बारी-बारी से ।
 [प्रस्थान]

बौटम यह लोग भाग क्यों रहे हैं ? यह मुझे डराने के लिये इन लोगो
 की बदमाशी है ।

[स्नाउट का पुन प्रवेश]

स्नाउट ओ बौटम ! तुम तो बदल गये हो । मैं तुम पर यह क्या
 देख रहा हूँ ?

बौटम क्या देख रहे हो ? अपनी जैसी गधे की खोपड़ी देख रहे हो ।
 है न ?

[स्नाउट का प्रस्थान, विवन्स का पुन प्रवेश]

विवन्स भगवान तुम्हे वचाये बौटम ! भगवान रक्षा करें । तुम तो
 बिल्कुल बदल गये हो ।

[प्रस्थान]

बौटम अब समझा इनकी बदमाशी । वे मुझे गधा बनाना चाहते
 हैं ? मुझे डराना चाहते हैं ? काश वे ऐसा कर सकते । लेकिन
 मैं यहाँ से टस से मस नहीं होऊँगा । कर लेने दो उन्हें, जो चाहे
 कर ले । मैं तो यही टहलूँगा और यही गाऊँगा और वे भी सुन ले
 कि मैं डरा नहीं हूँ ।

[गाता है ।]

काला मुर्ग रंग का स्याह

पीली पीली चोच, भोला,

थ्रीसल चिडिया गाना गाये,
रैन चिडिया ले पख पोला,

टिटानिया • (जाग कर) इस कुसुमो की गैय्या से यह कौन भला-सा
देवदूत है मुझे जगाता

बौटम

[गीत]

फिन्श, लार्क औ' अब्बावील औ'

गाती कुक्कू मस्त हाँ हाँ

उसका गीत अनेको सुनते

मना न करते सुन कर हाँ हाँ

और यह सच है कि चिडिया की वेवकूफी से टक्कर लेने को
किसके पास फालतू दिमाग है ? चिडिया से कौन झूठ बोले ?
'कुक्कू' पुकारा करे, पर ऐसा कभी नहीं होता ।

गाओ फिर प्रिय मधुर मर्त्य हे, विनय कर रही हूँ
मैं तुमसे,

टिटानिया

गीत तुम्हारा सुन कर मेरी श्रुति मे कैसा अमृत बरसता,

देख तुम्हारा रूप नयन मेरे पुलकित है,

आह तुम्हारे गुण को बरबस मेरे मुँह से कहलाते हैं

प्रथम दृष्टि मे ही मैं तुम पर रीझ गई हूँ,

शपथ सत्य है, मुझे प्यार है तुमसे गहरा ।

बौटम : श्रीमती । मुझे तो आपके ऐसे कहने की कोई वजह दिखाई
नहीं देती । और सच तो यह है कि आजकल विवेक और प्रेम
साथ-साथ तो रहते ही नहीं । और क्या अफसोस की बात है
कि कोई भला मानम पडोमी भी उनमें दोस्ती नहीं कराता ।
नहीं, मैं मौके पर दितलगी उडा सकता हूँ ।

टिटानिया जितने हो सुन्दर उतने हो बुद्धिमान भी ।

बौटम नहीं, विकुल गलत । अगर मुझमें इस जगल से भाग निकलने की अकल होती तो जरूर मैं इससे अपनी नौकरी बजवा लेता ।

टिटानिया इस वन से जाने की इच्छा करो न किंचित् ।

तुम चाहो या नहीं, किंतु इस कानन में ही

रहना होगा तुम्हें, जान लो,

मैं साधारण परी नहीं हूँ ,

मेरे शासन में रहती है ग्रीष्म सुहावन,

और प्रेम है मुझको तुमसे, चलो सग अब मेरे आओ

मैं दूंगी परियाँ तुमको जो, सतत तुम्हारी तन्मय हो कर

सेवा नित्य करेगी, सचमुच

महासिधुओं में से उज्ज्वल रत्नों को वे ले आयेंगी

देगी तुमको, गीत सुना कर तुम्हें रिभायेगी

मीठे स्वर गुजित करती,

जब तुम फूलों की शय्या पर सुखनिदिया में प्रिय

सोओगे ।

और तुम्हारी मर्त्य स्थूलता इस प्रकार मैं

दूर करूँगी तुमसे, तुम भी परिस्तान के प्राणी

जैसे ही दीखोगे ।

अरे पीज ब्लौसम ! मस्टर्ड सीड, आओ हे मौथ ।

कौचवैव ।

एक परी प्रस्तुत हूँ मैं

दूसरी परी मैं भी तो हूँ,

तीसरी परी मैं हूँ देखो

चौथी परी लो मैं भी हूँ ।

सब . कहाँ जाये हम ?
 टिटानिया इन सज्जन के प्रति विनम्र हो रहो सभी तुम
 जब यह चले चलो तुम इनके सग नाच कर,
 करो किलोल रिभाओ इनको,
 औ' अखरोट और वन के मीठे फल लाओ
 हरे-हरे अजीर बैगनी अगूरो के गुच्छे लाओ
 इस सम्मानित मधुर अतिथि को खूब खिलाओ ।
 दीना ममाखियो के मधु के छत्ते लाओ चुरा चुराकर
 उनकी मोमिल जाँघें काट लाओ वत्ती सी
 उन्हे बना कर जुगनू के नयनों की उज्ज्वल
 दीप्त शिखाओ पर सुलगाओ
 विभावरी मे,
 मेरे प्रियतम को शैया पर ले जाओ औ' निद्रित कर दो
 और जगाओ ।
 रगविरगी सुघर तितलियों के रगीन पख तुम लाओ
 इनके मुद्रित नयनों से रश्मियाँ चद्र की
 उन पखों से झलो उन्हे पखा सा लेकर ।
 शीश भुकाओ इन्हे अरे तुम नमस्कार कर
 परियो ! आओ ।

एक परी अहे मर्त्य हो विजय तुम्हारी ।
 दूसरी परी जय हो ! जय हो !
 तीसरी परी जय हे ! जय हे !
 चौथी परी जय जय ! जय जय !
 बौटम हे श्रीमान् ! हृदय मे कहता हूँ मुझ पर दया करे । पूजनीय

का शुभ नाम क्या है ! जान सकता हूँ ?

कौब वैव कौब वैव !

वोटम जरा और कुछ जानकारी हासिल करा देते श्रीमान् कौबवैव अपनी ! अगर मैं अपनी उगली काट लूँ तो आपसे मेरी हिम्मत खुल जाये । श्रीमान् आपका शुभ नाम ?

पीज ब्लौसन पीज ब्लौसन !

वोटम मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपया श्रीमती स्ववैश^१, अपनी माता और श्रीमान् पीस्कौड^२ अपने पिता को मेरी याद दिला देते । श्रीमान् ! आपसे तो मैं और भी परिचित होना चाहूँगा । हाँ, आपका क्या नाम है श्रीमान् ?

मस्टर्ड सीड मस्टर्ड सीड !

वोटम अच्छा श्रीमान् मस्टर्ड सीड ! आपका धैर्य तो मैं खूब जानता हूँ । वह जो कायर है न ? दानव जैसा साँड ! वह आपके घराने के कितने ही भलेमानमो को चबा कर खा चुका है । आपके घराने की बरवादी ने तो मेरी आँखों में आँसू भर दिये । श्रीमान् मस्टर्ड सीड ! आपसे मैं और जानकारी पाना चाहता था ।

टिटानिया : आओ इनकी सेवा करो, ले चलो इनको मेरे फूलों की झुरमुट में, मधुर कुञ्ज मे, चद्रकला^३ भी नयन पनीले ले कर देखो देख रही है, जब वह रोती है तब रोता है हर एक कुसुम लघुतम भी, किमी विवश वधन अभिलाषी का विलाप कर, आह बाँध दो मेरी जिह्वा सुधर प्रेम की, इन्हे याति से ले आओ नुम !

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वन का अन्य भाग]

[ओबेरोन का प्रवेश]

ओबेरोन

टिटानिया जागी है अब तक या सोई है ?
जगते ही क्या आया होगा सबसे पहले
दृष्टिपथ में उसके जिस पर वह तन मन से
न्यौछावर हो गई भूल होगी सब कुछ को ।

[पक का प्रवेश]

लो यह आया है मेरा सदेसा लाने-
वाला प्रिय है दूत, कहो अब मुझसे
ओ मतवाले ।

समाचार है क्या बतलाओ
परिस्तान का आज निशा में ?

पक

मेरी स्वामिनि पड़ी हुई है एक दैत्य के कठिन प्रेम में ।
वही कुञ्ज में है वह अपने मधुर छाये में,
सोई थी जब शिथिल अग वह
आये कुछ कारीगर वहाँ अधम श्रेणी के
जो एथेन्स की दुकानों में रोटी अपनी जुटे कमाते
अनगढ़ से रबूद, हे स्वामी ।

नाटक एक रचाने को अभ्यास कर रहे
अहे थीमियस के विवाह के वैभव को द्विगुणित
करने को,

उनमें सबसे मूर्ख और जड़ खोखल-मिर जो
पाइरैमस का पाठ कर रहा था, वह अपना

करके पाटं तनिक भाड़ी मे पहुँचा ज्योही
मैने उसको घेर लिया मौका भट पा कर,
तुरत गधे का सिर उसके चेहरे पर मैने

चढा दिया तब,

तभी उसे अपनी थिस्वी को उत्तर देने

नाटक मे था पुन पहुँचना,

वस फिर तो दिल्लगी हुई आरभ वही से ।

सग साथियो ने जब उसके, उसको देखा,

तो जैसे लुक छिप करके रंगते व्याध को

देख जगली बतखे सहसा,

या मटमैले लाल पाँव के कौए डर कर

काँव-काँव कर उडते है आवाज अचानक

मुन बढूक कठिन की आतुर,

बिखर-बिखर कर उडते है नभ में घबराये

त्यो उसको निहार कर उसके सगी साथी

डर कर भागे ।

पगध्वनि और हमारी सुन कर

गये लडखडा गिरते पडते एक दूसरे पर टकराते

‘खून खून’ चिल्लाते देते वे एथेन्स की घोर दुहाई,

बुद्धि दीन से डर के मारे काँप उठे जो सबल हो उठा ।

यो विवेक खो बैठे उल्टे सीधे करने लगे काम वह ।

काँटे भी चुभ गये विध गये उनके तन मे,

कपडो मे, टोपी मे, सब मे गडे निठुर वे,

उस भय मे मैने उनको तब दूर भगाया,

और परम सुन्दर उस पाइरैमस को मैंने
 वही रूप-परिवर्तित छोड़ा,
 ऐसा हुआ कि बस उस क्षण ही
 जागी टिटानिया और पहली दृष्टि उसी पर
 पड़ी अचानक, और तुरत ही
 पड़ी गंधे के महा प्रेम में रानी सहसा ।
 बहुत श्रेष्ठ हो गया कि मैंने नहीं कल्पना भी की इसकी ।
 पर क्या तूने

ओबेरोन

उस एन्थेस निवासी की आँखों में भी क्या
 डाल दिया मधु उसी कुसुम का, जैसे मैंने
 आज्ञा दी थी तुझे कि तू अवश्य करना यह ?
 मैंने उसको सोते पाया । काम कर दिया वह भी मैंने,
 थी एथेन्स की युवति पास ही सोती उसके,
 जब जागेगा वह अवश्य देखेगा उसको ।

पक

[हर्मिया और डेमेट्रियस का प्रवेश]

ओबेरोन

इधर खड़े हो हट कर देखो
 यह ही है वह पक । एथेन्स निवासी, है न ?
 वही वही है स्त्री पर यह वह पुरुष नहीं है ।

पक

डेमेट्रियस

आह प्रेम करता जो तुमसे उमका इतना
 क्यों करती हो तिरस्कार तुम ?
 किमी क्रूर रिपु पर ही अपना तिक्त रोष यह
 तुम बरमाना ।

हर्मिया

तिरस्कार करती हूँ केवल, किन्तु मुझे तो
 कहीं अधिक करना कुछ तुमसे और चाहिये ।

मुझे लग रहा, तुमने मुझे दिया है कारण
जो मैं तुम्हें शाप भीषण दे सकूँ मुक्त स्वर ।
यदि तुमने ही लाइसेन्डर की सोते में हत्या की है तो
ओ रुधिरार्द्र ! मुझे भी मारो ! खो दो मुझको घन
गभीर में ।

नहीं सूर्य भी हो सकता है दिन के प्रति इतना सच्चा सच
जितना था लाइसेन्डर मुझको ।

क्या सोती हर्मिया छोड़ वह जा सकता था ?
मैं मानूंगी सहज कि धरती ऊब चुकी है,
चंद्र मध्य में से खण्डित होगा,^१

पर तुम हत्यारे हो नहीं, नहीं मानूंगी,
तब ही तो तुम इतने भीषण हो गभीर हो ।

डेमेट्रियस
बँधा हुआ हूँ, तभी लग रहा हूँ मैं ऐसा,
यह कठोर निर्दयता तेरी वेध गई है मेरे उर को ।
ओ बधिके ! फिर भी तू कितनी सुंदर लगती
जैसे शुक्र नखत लगता है नील व्योम में ।

हर्मिया
लाइसेन्डर की बात त्याग दी ? अरे कहाँ वह ?
डेमेट्रियस सुजन बतलाओ, क्या तुम उसको
नहीं सौंप दोगे फिर मेरे इन हाथों में ?

डेमेट्रियस
हर्मिया
मैं उसका शव दूंगा अरे गिकारी भीषण कुत्तों को ही ।
ओ कुत्ते ! ओ अधम श्वान ! तू विवश कर रहा
मुझे कि मैं कौमार्य-धैर्य की मर्यादा का

१ मूल में एक कथा का उल्लेख है जिसमें हिन्दी में प्रवाह रुकता है, अतः
भावानुवाद किया है ।

उल्लघन कर जाऊँ निश्चय ।

तब तूने ही उसकी हत्या की है ?

अब से तेरी गणना हो न मनुष्यो में सच ।

मेरे हित कह, एक बार तो सच कह दे तू ।

क्या तूने जगते में उसको देखा था तब ?

या तूने सोते में उसकी हत्या की है ?

आह सर्प क्या इतना काम न कर सकता था ।

पर जघन्य ओ नाग ! सर्प दो जिह्वा वाला

तेरे समुख क्या है ? तू हे विप का निर्भर ।

अरे व्यर्थ ही मुझ पर क्यों हो दोष लगाती ।

मैं लाइसेन्डर की हत्या का अपराधी हूँ नहीं कभी भी ।

कह सकता हूँ केवल इतना, मरा नहीं है वह निश्चय ही ।

विनती करती हूँ बतला दो । सकुशल है वह ?

बतला देता, पर उससे क्या मुझे मिलेगा ?

एक विरोध मिलेगा वह अधिकार तुझे भी,

फिर न देख पायेगा मुझको,

तेरी घृणित उपस्थिति से मैं बच जाऊँगी,

वह जीवित हो या मृत हो पर मुझसे तू तो

कभी न मिलना ।

[प्रस्थान]

डेमेट्रियस

ऐसे भीषण क्रोधग्रस्त क्षण में इससे मिल

क्या पाऊँगा,

यही रुकूँ इसलिये तनिक में ।

आह दुःख का भार और भी बोझिल बनता,

डेमेट्रियस

हर्मिया

डेमेट्रियस

हर्मिया

दिवालिया निदियाँ कर्जे मे दुख के डूबी,
उसे चुका दूँ । हाय थक गया हूँ मैं कितना ।
रुक जाऊँ मैं यही श्रात हो गया हाय मैं ।

[लेटता है, सो जाता है ।]

ओवेरोन

यह तूने क्या कर डाला पक । तूने तो यह
वडी भूल कर डाली । जा कर डाला तू ने
सच्चे प्रेमी की आँखों में मधु-सुकुसम ।
तेरी इसी भूल के कारण सच्चा प्रेम बिगडने को है,
और नही होगा सच्चा अब भूँठा भी तो वह ।

पक

भाग्य ! भाग्य शासन करता है,
एक मनुज है सत्य धारता,
लाखों भूँठी शपथें खा कर हारा करते ।

ओवेरोन

वायु वेग से जा कानन मे
तू एथेन्स की हेलेना को ढूँढ तुरत ही,
वह दुखियारी, पाण्डु पड गई, प्रेमोच्छ्वासो
मे यौवन का रूप खो रही ।

किसी तरह भ्रम फैला कर तू उसे यहाँ ला,
मैं इसकी आँखों पर अब जादू करता हूँ
खुले नयन तब वह आ जाये समुख इसके ।

पक

जाता हूँ, जाता हूँ, देखो अब जाना हूँ,
मैं तातार-धनुष से छूटे द्रुतगति शर सा
चला पवन पर, त्वरित चपल चल चरण चला यो ।

[प्रस्थान]

ओवेरोन

यह वैगनी रग का फूल
मन्मथ-शर मे आहत फूल,

इसे नयनतारा मे इसकी
 मैं निचोड दूँ, जगे प्रीत ही
 जब देखे यह प्रेयसि अपनी,
 लगे इसे वह रूपसि सजनी ।
 जैसे शुक्र व्योम मे दिखता
 उज्ज्वल निर्मल चमचम करता ।
 जय हो उसकी सुन्दरता की,
 अरे पुरुष ! खुल नयन तुम्हारे
 करे याचना उससे भुककर
 मधुर प्रेम की हर्ष, जगा रे ।

[पक का पुन प्रवेश]

पक

ओ जय ! परिस्तान के राजा,
 हेलेना यह रही आ गई,
 और युवक वह जिसको मैंने
 पहले डेमेट्रियस समझा था
 उससे प्रेम याचना करता ।
 देखेगे यह नयी दित्तगी ?
 हे प्रभु ! कैसे मूर्ख लोग हे
 मर्त्य भला यह ।

ओवेरोन

अरे उधर हट ।
 उनका कोलाहल डेमेट्रियस
 की निद्रा को भग करेगा ।

पक

नव ये दोनो पुष्प करेगे
 उमी एक स्त्री मे महमा ही प्रेम याचना,
 वह क्या नहीं होगी दित्तगी नयी ही ?

वह जो सकट अद्भुत बनकर सहसा छाते
मुझमे वे ही अधिकाधिक आनन्द जगाते ।

[लाइसैन्डर और हेलेना का प्रवेश]

लाइसैन्डर

भला सोचती क्यों हो मैं सच
तिरस्कार से प्रेम याचना करता हूँ यह ।
घृणा कभी आती अश्रुओं में हे सुदरि ।
देखो जब मैं शपथ ग्रहण करता हूँ आँसू वह आते हैं,
शपथों का जब जन्म आसुओं में हो वाले ।

उसे असत्य न समझो जग में ।

यह सब तुमको मुझमें क्यों है घृणा दीखता,
श्रद्धा स्नेह फहरते आगे, कैसे दूँ प्रमाण मैं इसको
सत्य बना दूँ ?

हेलेना

अरे तुम्हारी चालाकी बढ़ती जाती है,
सत्य सत्य का जब करता है हनन । अरे यह
है गैतानो की पवित्रता की छलना ही ।
यह है वही शपथ जो की थी तुमने पहले
सुघर हर्मिया से, क्या तुम उसको त्यागोगे ?
एक ओर जो मुझसे की है और कर चुके जो तुम
पहले सुघर हर्मिया से लाइसैन्डर ।
इन शपथों को एक तुला के दो पलड़ों पर
रख कर यदि तोला जायेगा,
तो दोनों का भार एक सा होगा केवल कहानियों सा,
हलका फुत्का, जिसमें कोई सत्य नहीं होगा,
न भार ही ।

लाइसैन्डर

मुझे नहीं था ज्ञान तनिक जब

उससे कभी प्रतिज्ञा की थी ।

हेलेना मुझको लगता, वही हाल है अब भी जब तुम
त्याग रहे हो उसे अचानक ।

लाइसेन्डर डेमेट्रियस प्यार करता है उसको देखो,
और प्यार करता न तुम्हे वह ।

डेमेट्रियस (जाग कर) आह हेलेना ! देवि ! अप्सरे !
दिव्य ज्योति ! कितनी सुदरि हो तुम तिलोत्तमा !
प्रेयसि ! किस से तुलना करूँ तुम्हारे इन सुदर
नयनों की ?

स्फटिक कहाँ है इतना निर्मल !

यह दाडिम दगना छवि कैसी भव्य उजागर !

इन अधरो की सुघर लालिमा अकथनीय है,

सलज हिमानी सा कर कितना श्वेत पूत है,

प्राची के मृदु मद मलय सा कपित करती ।

गरिमा के इस मधुर कोप ! इस दुग्ध धवल से

घनीभूत सौंदर्य अमल को

मुझे चूम लेने दो क्षण भर !

राजकुमारी हो तुम रूपसि ! मकल स्त्रियो मे !

हेलेना हे दुर्भाग्य ! नरक ! लगता है तुम सब मिल कर

मुझसे यह अति क्रूर कठिन उपहास कर रहे !

मे हूँ बनी तुम्हारे हँसने को अब कोई केन्द्र बिंदु हूँ ?

यदि तुमसे कुछ भी दाक्षिण्य दया है बाकी

तो क्या ऐसे मुझे कचोट छेड़ने तुम मन्न ?

क्या मैं नहीं जानती मुझसे घृणा तुम्हें है ?

क्या तुमको कुछ मिन जाना है मुझे छेड़कर ?

दिखते हो तुम पुरुष, पुरुष यदि तुम हा सचमुच
तो क्या एक विनम्र नारि से ऐसा दुर्व्यवहार
तुम्हे कुछ फबता है सच ?

शपथ खा रहे, और प्रतिज्ञाएँ करते हो,
अग-अग की स्तुति करते हो मेरे तुम यो,
जबकि ज्ञात है मुझे, घृणा मुझसे करते हो ?
तुम दोनों हो प्रतिद्वन्द्वी ही और हर्मिया
मे करते हो प्रेम और अब दोनों मिल कर
प्रतिद्वन्द्वी बन गये हेलेना के पीछे ही ?
उसका ही उपहास कर रहे ?

इस दीना अवला कुमारि की आँखों में आँसू
भरना क्या

पौरुष है या कोई बड़ा काम है बोलो ?
और घृणा से चालित हो कर ऐसा करते ?
कोई भी कुलीन वाला इससे भी
अधिक और किससे दुःख पाये ?

इस व्याकुलपन के धीरज को इतना तो मत
हाय सताओ ।

अरे तुम्हारा खेल हमारी मौत बन गया ।
डेमेट्रियस ! क्रूर हो निश्चय ! रहो न ऐसे ।
तुम्हे हर्मिया से है प्रेम सत्य है यह तो ।
तुम्हे ज्ञात है और ज्ञात है यह मुझको भी ।
अरे हर्मिया के प्रति अपना प्रेम छोड़ कर

लाइसैण्डर

आया हूँ मैं सकल शक्ति से, पूरे मन से,
हेलेन मुझको दे दो, इसमें सचमुच मुझको

हेलेना
डेमेट्रियस

बहुत प्यार है और करूँगा
प्यार इसे मैं मृत्यु रेख तक ।
कभी निठुर उपहास न ऐसा हुआ कही भी ।
लाइसेन्डर ! हर्मिया तुम्हारी रहे, मुझे तो
नही चाहिये ।
कभी प्यार यदि मैंने उसको किया, किया
होगा क्या जाने ?
वह तो सब अब दूर हो गया ।
एक अतिथि की भाँति हृदय यह उसे त्याग
आया है मेरा ।

लाइसेन्डर
डेमेट्रियस

हेलेना घर है, मन मेरा घर लौटा है,
यही रहेगा, सचमुच अब वह घर आया है ।
हेलेना ! विश्वास न करना ।
वह विश्वास गिराओ मत तुम
नही जानते जिसको देखो ।
अपने सकट को पहुँचानो ! इसका मूल्य बहुत
मँहगा होगा यह जानो !
लो प्रेयमि आ गई तुम्हारी ! आई देखो !

[हर्मिया का पुनः प्रवेश]

हर्मिया

कैसी अधियारी छाई है, गहन रात है,
ज्यो पुतली की स्याही बाहर फैल गई है,
जरा जरा सी आहट पाकर चौकन्नी होती हूँ सहमा,
नही दिखाई देना कुछ भी भिन्नी सी तिमिरा छाई है,
कानों में प्रतिध्वनि करता है धीमा स्वर भी
जैसे नयनों के अभाव का मोल चुकाना अवकार है ।

लाइसैन्डर । ये मेरे नयन न तुम्हे खोज पाये
कितना चल ।

वलिहारी इन कानों की जो स्वर सुन कर ही
मुझे खींच लाये इस पथ में ।

पर किस निष्ठुरता के वश हो
तुमने मुझको ऐसे छोड़ा ?

लाइसैन्डर उसे रोकता कौन जिसे उठ चल पड़ने को
प्रेम विवश करता था क्षण-क्षण ।

हर्मिया वह कैसा था प्रेम भला जो लाइसैन्डर को
हाथ ले गया मुझसे यो वियुक्त कर ऐसे ?

लाइसैन्डर लाइसैन्डर का प्रेम नहीं रुकने देता था
उसके मन को

सुदरि हेलेना के प्रति जो आकर्षण था
उसने तो वन व्यापक मुझको घेर लिया यो ।

तू क्यों मुझको ढूँढ़ रही है ? क्या इतना भी समझ न
पाई,

तेरे प्रति जो घृणा जगी है मेरे मन में
वही मुझे लाई है तुझसे दूर खींचकर ?
क्या कहते हो ? लगता है तुम नहीं बोलते ।
अरे असम्भव सा लगता है ।

हेलेना आह ! अरे तू भी है इस पडयत्र क्रूर में
मिली हुई ही । तीनों मिल कर एक हो गये,
मुझसे ऐसा निर्दय खेल खेलने धिक् धिक्
जब कि जानते हो मैं कितनी दुखयारी हूँ ।
ओ घातक हर्मिया ! न कर ऐसा प्रहार तू ।

ओ कृतघ्नतम नारी ! क्या तू मिली हुई है
इन दोनों से इस कठोर छल में मुझको ऐसे
वहलाने ?

क्या हम दोनों की ये बातें उन घड़ियों की
जो न बीतने की आती थी, वहनापे की वे सीगधे,
हाथ अलग करने वाले जब क्रूर समय को हम दोनों
गाली देती थी,

वह सब कुछ तू भूल चुकी है ?
वचन के मासूम खेल, पढ़ने के दिन की घनी मितार्ई,
वह भी री था स्नेह, हर्मिया !

हम तुमने दो कृत्रिम विधना वन कर मिल कर
काढा था न कुमुम एक ही ?

सग खेल, उठना संग सग था,
एक गीत गाती थी हम तुम एक वाद्य पर
जैसे हाथ, बुद्धि, औ' सारे अग हमारे एक हो गये थे
मिल मिल कर,

ऐसे सँग सँग बढी अरे हम, एक कुमुम की
दो पखुडियाँ, अलग-अलग लगती थी, फिर भी
एक एक थी !

एक वृत्त पर दो कलियाँ थी मानो हम तुम ।
योद्धा के उम कवच पर लगे राज चिन्ह सी
पूरक थी हम !

और हमारा इनने दिन का प्यार आज तुम हो
विनेस्ती ?

मे हैं हाथ सहेती जिमने ही प्रिन्द तुम

मिली हुई हो इन पुरुषों से ?

यह क्या है मित्रता ? नहीं है यह नाय्योचित
मे करती निंदा हूँ इसकी, सारी अवला यही करेंगी !
भले आज मैं हाय अकेली दुःख पा रही ।

हर्मिया

कैसा यह आवेग मुझे विस्मय होता है,
मैं तो तुमसे घृणा न करती, किंतु तुम्हारे
शब्दों में मेरे प्रति क्यों है घृणा उमड़ती ?

हेलेना

कहो नहीं क्या अपमानित करने को तुमने
लाइसैन्डर को भेजा है यो मेरे पीछे,
जो वह मेरे वदन नयन की स्तुति करता है ?
और तुम्हारा

डेमेट्रियस दूसरा-प्रेमी

जिसने अभी कुछ समय पूर्व किया मुझको अपमानित
कुचला था मेरे मन को जिसने पाँवों से,

अव देवी, अप्सरा, दिव्य, बहुमूल्य, व्योम की
ज्योति कह रहा है मुझको क्यों ?

जिसमें उसको घृणा उसी से ऐसी वाते ?
क्यों लाइसैन्डर प्रेम तुम्हारा ठुकराता है ?
उसके भीतर कितना था वह सिधु सदृश जो !
मुझमें स्नेह, प्रेम अकुलाहट दिखा रहा है
क्योंकि तुम्हीं ने भेजा था ' सम्मति दी अपनी ?
क्या है यदि सुंदरी नहीं मैं हूँ तुम जैसी
तुम ना आकर्षण सम्मान न पाया मैंने,
भाग्य नहीं यदि, प्रेम न पाया, तो भी क्या है ?
पर अकाक्ष्य को प्रेम ।। हाय दारुण है पीडा ।

घृणा नहीं इस पर तो तुमको करुणा सजनी
करना उचित लगेगा निश्चय ।

हर्मिया

नहीं समझती मैं तो तुम यह सब क्या मुझसे
कहती हो ऐसे यो लच्छे से उलझा कर ।

हेलेना

अच्छा ! और बना लो तुम गभीर वदन को ।
मेरी फिरते पीठ बनाओगी मुँह अपना ?
एक दूसरे को मिचका कर आँख, खेल को जारी रखना,
यह उपहास अगर पूरा उतार लोगी तुम
लिखा जायेगा ? इसके तो फिर वर्णन होंगे ?
यदि तुममें कुछ दया, हया या ध्यान शेष है,
क्या मुझमें ऐसी निर्दयता कभी उचित है ?
किंतु विदा ! कुछ सीमा तक तो स्वयं दोष है
मेरा ही यह,

लाइसेन्डर

मृत्यु, समाप्ति शीघ्र इसका निदान कर दोगे ।
स्को प्रिये हेलेना, मेरी वात सुनो तो,
मेरी प्रेयसि, मेरा जीवन, आत्मा मेरी
मुदरि अप्परि ओ हेलेना ।

हेलेना

अहा ! धन्य है ! क्या कहना है !

हर्मिया

प्रिय ! उमका ऐसा अपमान करो मत तुम यो !

डेमेट्रियस

यदि यह समझा सकती नहीं, रुझा तब मैं
विवश अभी लो डमको ।

लाइसेन्डर

यह हर्मिया मुझे क्या समझायेगा गुन तु !
डेमेट्रियस ! मुझे क्या विवश करेगा रे तू !
इसकी दीन वितनियों में वर शक्ति कहा है ?
तेरी प्रमत्ती में तो उतनी भी न शक्ति है !

हेलेना । मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, अपने
जीवन की सौगंध । चाहता हूँ मैं तुमको ।
जो तुम कहो उसी की शपथ आज खाऊँगा
जो यह कहे कि तुमसे मुझको प्यार नहीं है
उसे प्रमाणित करने को भूँठा मैं बोलो ।

डेमेट्रियस

मैं कहता हूँ इससे कहीं अधिक करता हूँ
प्यार तुम्हें मैं ।

लाइसेन्डर

यदि कहते ही हो तो आओ हम कर लेवे
शक्ति परीक्षण, करे प्रमाणित । साहस है न ?

डेमेट्रियस

मैं तो आतुर हूँ लो आओ ।

हर्मिया

लाइसेन्डर । इस सबका जा कर अंत कहाँ है ?

लाइसेन्डर

दूर दूर हो अरी कलमुँही ।

डेमेट्रियस

नहीं नहीं श्रीमान् । समझ कर ।

ऐसे मत कूदो उलाँघ कर । अपनी चाल चलो हाँ,

अब भी पडो न सन्मुख । जाओ जाओ ।

क्या लोगे तुम ! नाजुक हो पालतू आदमी ।

लाइसेन्डर

जा जा कुत्ते ओ विलाव तू । नीच ।

हट जा पीछे, वर्ना पूँछ पकड़ भटकूँगा तुझे
साँप सा ।

हर्मिया

कैसा परिवर्तन है ? तुम हो गये अचानक

कैसे यो अमभ्य ? हे प्रियतम

लाइसेन्डर

तेरा प्रियतम । ओ वीनी तातारिन । जा जा ।

घृणित, मूढ़ तू ? कड़वी दवाँ कसैली । चल हट ।

हर्मिया

क्या तुम यह दिन्नलगी कर रहे ?

हेलेना

हाँ यह मच है और कर रही हो तुम भी तो ।

लाइसैन्डर
डेमेट्रियस

डेमेट्रियस । वचन निभाऊंगा मैं अपना तुझसे सुन ले ।
तुम्हें किसी के बधन ने बाँधा है कोमल ।
नहीं तुम्हारे शब्दों का विश्वास करूँगा ।

लाइसैन्डर

किसकी कहते हो बधन कह । यही हमिया ।
क्या मैं इसको मारूँ और हटा दूँ पथ से ?
करता इससे घृणा कितु मैं, फिर भी नहीं मार पाऊँगा ।

हमिया

आह ! और क्या मरण भला है मेरा बोलो
और बड़ा है कहो घृणा से क्या जो काटे ?
घृणा ! अरे मुझसे ! फिर भी क्यों ?
क्या तुम नहीं वही लाइसैन्डर ?
क्या हूँ नहीं हमिया भी मैं वही बताओ ।
वैसी ही सुंदर हूँ अब भी जैसी थी मैं क्षण भर पहले ।
अरे रात में ही तो तुमने प्रेम किया है,
और रात में ही तुमने छोड़ा है मुझको ?
क्यों ? क्यों छोड़ा मुझे । अहे देवता गगन के देखो
देखो !

लाइसैन्डर

क्या है इस मक्का रहस्य ? मुझमें कह तो दो ।
जीवन की मीगध । और मैं नहीं देखना
तुम्हें चाहता अब क्षण भर भी ।
आशा की रेखा के बाहर हो जा अब तू ।
मदेहों, शकाओं, प्रश्नों आदिन की परिधियाँ मकर तू
उल्लिखित कर, निश्चय कर ले, और अधिक
कोई न मन्य है, नहीं कठिन उपहास समझना अपने
मन में

कि मैं घृणा करना हूँ तुम्हें,

और प्यार करता हूँ मैं प्यारी हेलेन को ।
 ओ छलिया ! ओ जादूगरनी ! कुसुम कीट तू ।
 और प्रेम की चोर ! कहाँ से आई निशि में
 मेरे प्रिय का हृदय ले गई मुझसे ही तू
 ओ मायाविनि ! छीन हाथ कैसे बतला तो ।
 बाह ! खूब यह रही ! नहीं क्या तुझमें बाकी
 नारी की लज्जा, कुमारिका का सकोच हर्मिया !
 कह तो ?

क्या उठ गयी सहज तेरी ब्रीडा भी सहसा !
 क्या तू मेरी मधुर विनम्र जीभ से भी सच
 चाह रही है उत्तर कड़वे और चुभीले ।
 ओ धिक्कार ! तुझे धिक् धिक् है,
 अरी नकलचिन ! ओ कठपुतली !
 कठपुतली में । क्यों ? अच्छा तो यो है तेरा
 खेल, देखती हूँ क्या तेरी चाल भला है ।
 हम दोनों की ऊँचाई की तुलना करके
 तूने अपनी लम्बाई को दिखलाया है ।
 अपने लंबे तन का तूने यह प्रभाव इन पर डाला है ?
 पर इस ऊँचाई के कारण क्या तू इसके
 मन में इतनी ऊँची होकर बैठ गई है ?
 क्या मैं बौनी हूँ इतनी, इतनी नीची हूँ ?
 क्यों हूँ नीची मैं, कह ओ तू
 कुसुम-नुमज्जित लंबे डंडे !
 मैं नीची हूँ ? इतनी नीची कभी मैं नहीं सुन ले लवू !
 मेरे नख जो तेरे नयनों तक न पहुँच पायें मुनती है ?

हेलेना

हे सज्जनगण ! यदपि आप उपहास कर रहे हैं
मेरा, पर

ऐसा होने न दें, एक विनती है मेरी ।

यह आघात नहीं कर पाये मेरे ऊपर ।

मैं ऐसी अभिशप्त नहीं थी, मार पीट मे

ऐसी कुशल नहीं हूँ मैं सच ।

मैं स्त्री हूँ भीरु महज ही, डमको रोके,

मार नहीं पाये यह मुझको । आप समझते

होगे इसको नीचा मुझमे, पर न समझिये

कि मैं कर सकूंगी इसकी कोई बराबरी ।

हर्मिया

नीचा । फिर कहती हूँ । सुन लो ।

हेलेना

भली हर्मिया ! इतनी कटु मत हो तू मुझसे ।

मैं तो तुझे प्यार करती थी मदा हर्मिया ।

तुझमे लेती थी सत्ताह, नुक़मान कभी तेरा न किया है,

डेमेट्रियस का प्रेम—एक यह विषय छोड़ दें ।

मो भी डमको प्रिय समझा था, प्रेम प्राप्त करने को

इसका

वृत्ता दिया मैंने डमको कि पलायन होगा

आज तुम्हारा सघन विपिन मे ।

इसने पीछा किया और हाँ । प्रेम हेतु ही

मैंने डमका;

इसने मुझको डाँटा है, धमकाया भी है

मुझे पीट देगा, उफ़ कितना निरम्कार है

इसने मेरा किया, मृत्यु का भय दिखनाया,

जाने दो मुझको छोड़ो अब बहुत हो गया,

मैं एथेन्स चली जाऊँगी ढोती अपनी महामूर्खता,
अब न कहेगी कोई पीछा, जाने दो मुझको हे सखि
तुम ।

देखो मैं कितनी भोली हूँ, कितना प्यार भरा है
मुझमें ।।

हर्मिया . चल चल जा जा । तुझे रोकता कौन यहाँ पर ?
हेलेना मूर्ख हृदय, जो मैं पीछे छोड़े जाती हूँ ।
हर्मिया अरे साथ क्या लाइसेन्डर के ?
हेलेना डेमेट्रियस के ।
लाइसेन्डर हेलेना । मत डर, कुछ कर सकती है तेरा

किंतु नहीं यह ।

डेमेट्रियस अरे भले ही लो तुम भी हर्मिया पक्ष ही,
पर मेरे रहते वह कुछ भी कर न सकेगी ।

हेलेना अरे नहीं । जब यह होती है क्रोध, बहुत

चालाक कुटिल हो जाती है यह ।

बड़ी कर्कशा थी यह आई थी पढ़ने को सग हमारे
शाला में मैं सच कहती हूँ ।

है तो छोटी । नीचा मत कहना, है यह वैसे
बड़ी भयानक ।

हर्मिया छोटी । नीचा । और कुछ नहीं । छोटी । नीची ।
कब तक तुम करवाओगे अपमान और यह
कूर ठिठोली मेरी बोलो ।

हट जाओ तुम । जरा देख ही लूँ इसको मैं ।

लाइसेन्डर चल हट वौनी । भाग तिनकनी ।

वैँटी घास-से-गाँठ गठी नीं ।

बीज जरा सी जड़ की उलझन,
 मनका सी है चली अकडती ।
 डेमेट्रियस माने ना माने मेहमान बनूंगा मैं तो ।
 क्या जोरो से बोल रहे हो और तरफदारी
 भी किसकी ?
 जो कि घृणा करती है तुमको ।
 जाओ ! जाओ ! इसे अकेली ही रहने दो ।
 हेलेना की बात न करना, पक्ष न लेना कह देता हूँ ।
 अगर जरा भी प्यार दिखाया उसको तुमने,
 तो लो समझ कि तुमको उसका मोल चुकाना
 होगा, समझे ?

लाइसेन्डर अब वह नहीं रोकती मुझको,
 आ जा अब तू हिम्मत हो, तो
 देखे किमका है अधिकार आज हम देखे,
 तेरा है या, है यह मेरा,
 हेलेना है देखे किमकी ।

डेमेट्रियस • तो फिर आ जा ! चल देखगे ।
 मग चलूंगा तेरे, देखूं तेरा माहम ।
 [लाइसेन्डर और डेमेट्रियस का प्रस्थान]

हमिया देखा अरी छवीली तूने, तेरे कारण
 यह सकट है । नहीं, न जा अब उनके पीछे ।

हेलेना 'मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकती कोई ।
 तेरे इस मनहूस मग मैं नहीं रहूँगी ।
 भगड़े को तो तेरे हाथ उड़ाते रहते,
 मैं तेरी बगवनी क्यों कर कर सकती हूँ ?

पर लबे हैं पाँव अरी मेरे तो
मुझे भागने से तू रोक नहीं पायेगी ।

[प्रस्थान]

हर्मिया • उफ ! क्या आश्चर्य ! कल्लू क्या !
किंकर्तव्य विमूढ हो गई मैं तो यो ही ।

[प्रस्थान]

ओबेरोन यह तेरी लापरवाही है । या गलती है,
या तू जान बूझ कर करता
है ऐसी शैतानी । क्यों पक !

पक ओ छायाओ के राजा ! विश्वास करे, सच,
क्या न आपने कहा कि मैं एथेन्स नगर के
वस्त्रों को निहार कर ही पहुँचानूँ नर को ?
मेरा क्या अपराध भला इसमें है देखे ?
मैंने तो एथेन्स निवासी के नयनों में मधु आँजा है,
इनका भगडा वैसे ही तो, मुझे एक आनंद हो गया ।
ओबेरोन देख रहा है ? गये हुए हैं प्रेमी दोनों

द्वन्द्वयुद्ध के लिये हूँढने जगह इस समय ।
रोविन ! कर शीघ्रता रात को गहरा कर दे ।
सघन कुहर से यह तारिल चँदवा तू ढँक दे,
जिसमें से कुछ दीख न पाये, अचेरोन सा,
यो भटकाता चल तू इन दोनों को आगे,
ऐसे जो ये निकट न आये एक दूसरे के अव पथ में ।
कभी बोल तू लाइसैन्डर सा, और कभी तू
डेमेट्रियस सदृश कटुवचन सुना फिर महमा,
यो दोनों को खूब-खूब भडका तो लेकिन

वीज जरा सी जड़ की उलझन,
 मनका सी है चली अकड़ती ।
 डेमेट्रियस माने ना माने मेहमान वनूंगा मैं तो ।
 क्या जोरो से बोल रहे हो और तरफदारी
 भी किसकी ?
 जो कि घृणा करती है तुमको ।
 जाओ ! जाओ ! इसे अकेली ही रहने दो ।
 हेलेना की बात न करना, पक्ष न लेना कह देता हूँ ।
 अगर जरा भी प्यार दिखाया उसको तुमने,
 तो लो समझ कि तुमको उसका मोल चुकाना
 होगा, समझे ?

लाइसेन्डर अब वह नहीं रोकती मुझको,
 आ जा अब तू हिम्मत हो, तो
 देखे किसका है अधिकार आज हम देखे,
 तेरा है या, है यह मेरा,
 हेलेना है देखे किसकी ।

डेमेट्रियस : तो फिर आ जा ! चल देखेंगे ।
 सग चलूंगा तेरे, देखूं तेरा साहस ।
 [लाइसेन्डर और डेमेट्रियस का प्रस्थान]
 हर्मिया देखा अरी छवीली तूने, तेरे कारण
 यह सकट है । नहीं, न जा अब उनके पीछे ।

हेलेना मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकती कोई ।
 तेरे डम मनहूस सग मैं नहीं रहूंगी ।
 भगडे को तो तेरे हाथ उबलते रहते,
 मैं तेरी बराबरी क्यों कर कर सकती हूँ ?

पर लवे है पाँव अरी मेरे तो
मुझे भागने से तू रोक नहीं पायेगी ।
[प्रस्थान]

हर्मिया उफ ! क्या आश्चर्य ! करूँ क्या !
किंकर्तव्य विमूढ हो गई मैं तो यो ही ।
[प्रस्थान]

ओवेरोन यह तेरी लापरवाही है । या गलती है,
या तू जान बूझ कर करता
है ऐसी शैतानी ! क्यों पक !

पक ओ छायाओ के राजा ! विश्वास करे, सच,
क्या न आपने कहा कि मैं एथेन्स नगर के
वस्त्रो को निहार कर ही पहुँचानूँ नर को ?
मेरा क्या अपराध भला इसमें है देखे ?
मैंने तो एथेन्स निवासी के नयनों में मधु आँजा है,
इनका भगडा वैसे ही तो, मुझे एक आनंद हो गया ।

ओवेरोन देख रहा है ? गये हुए है प्रेमी दोनों
द्वन्द्वयुद्ध के लिये ढूँढने जगह इस समय ।
रोविन ! कर शीघ्रता रात को गहरा कर दे ।
सघन कुहर से यह तारिल चँदवा तू ढँक दे,
जिसमें से कुछ दीख न पाये, अचेरोन सा,
यो भटकाता चल तू इन दोनों को आगे,
ऐसे जो ये निकट न आयें एक दूसरे के अब पथ में ।
कभी बोल तू लाइसेन्डर सा, और कभी तू
डेमेट्रियस सदृश कटुवचन मुना फिर सहसा,
यो दोनों को खूब-खूब भडका तो लेकिन

पास न आने दे दोनो को ।

और अत मे अरे नगीली निंदिया आ घेरे दोनो को
वनी मौत सी सर्वग्राहिणी,

सीसे जैसे भारी वनके पग हो जाये चलते चलते,
गादुर जैसे पख नीद फैला कर ढाँके इनको घीरे ।

तब यह रस लाइसेन्डर के नयनो मे पक । तू
अरे डाल देना, इसमे गुण यह मनहर है

सारी भूलो को सुधारता है यह क्षण मे,
और सुला देता है गहरी सी निद्रा मे,

जब जगता है व्यक्ति, उसे यह सकल ठिठोली
एक स्वप्न सी, व्यर्थ और फलहीन कल्पना सी

लगती है ।

फिर एथेन्स जायेगे प्रेमी, इनका सुदर
मिलन मृत्यु तक फिर न वियोग कभी भेलेगा ।

तू जब तक यह सब करता है,

मे जाता हूँ अपनी रानी के समीप औ'

माँगू उससे यही इंडियन बालक जा कर,

फिर उसकी आँखो से जादू दूर करूँगा,

फिर वह दैत्य न उसको प्रिय सा लग पायेगा,

होगी चारो ओर शांति फिर ।

पक

परियो के राजा, यह सब जल्दी होना है,

क्योकि अजदहे-त्वरगति निशि के

मेघो को अब काट रहे है जल्दी-जल्दी,

ऊपा का हरकारा देखो उभर रहा है,

जिसके आते ही पिशाच जो रातो मे है घूमा करते

कब्रिस्तानो मे जाते है लौट । और वे
 आत्माएँ अभिशप्त चतुष्पथ या बाढो की
 वेला मे जो गडी अनगडी रही, चली भी
 गई मौन अपनी शैय्याओ पर सोने को
 जिन पर रेगा करते कीडे,

क्योकि लाज आती है उनको
 कही न दिन आ देखे उनके वास स्थान को,
 वे तो स्वत ज्योति से निर्वासित रहते है,
 उन्हे स्याह भौहो वाली यह रात भयानक
 ही भाती है सदा अँधेरी ।

ओवेरोन

हम तो किंतु आत्माएँ है कुछ और किस्म की ।
 मैने तो ऊपा से कितनी बार न जाने क्रीडा की है !
 मै वन प्रातर वासी जैसा, कुञ्जो में चलता रहता हूँ
 जब कि पूर्व का सिंहद्वार है रक्तिम होता लाल दीप्त सा,
 नेप्च्यून पर वरदायिनि किरणे खुलती है,
 वे उसके हरिताभ सुनिर्भर ताल स्वर्ण से वन जाते है,
 फिर भी जल्दी ही अच्छी है, देर करो मत,
 दिन के आने के पहले ही पूर्ण करो यह
 सकल कार्य तुम ।

[प्रस्थान]

पक

ऊपर नीचे, ऊपर नीचे,
 उन्हे चलाऊँ आगे पीछे ।
 गाँव खेत में मैं हीँआ हूँ,
 भटका दूँ अब उनको पीछे ।
 यह आया लो एक ।

[लाइसेन्डर का पुनः प्रवेश]

लाइसेन्डर

कहाँ ? कहाँ है ओ गर्विले !

डेमेट्रियस ! बोल, चुप क्यों है ?

पक

अरे नीच ! आ जा । मैं कब से राह देखता
खड्ग खींच कर, किधर छिपा है ?

लाइसेन्डर

यह ले आया, सीधा तुझ पर

पक

आ जा जल्दी ! इधर चला आ यहाँ भूमि है
समतल आ जा

[लाइसेन्डर का आवाज़ का पीछा करते हुए प्रस्थान]

डेमेट्रियस का पुनः प्रवेश]

डेमेट्रियस

लाइसेन्डर ! क्यों नहीं बोलता ! ओ कायर तू
भाग गया है ? अरे भगोड़े ! बोल छिपा है
किस झाड़ी में ? कहाँ छिपाये है अपना सिर ?

पक

ओ कायर, बढ-बढ कर तारों को न छेड़ तू,
ओ बकबकिये !
कहाँ झाड़ियों से कहता है आओ लडने !
अरे इधर आ इधर ? निकल मैदान देख तू !
आ जा बच्चे ! अरे दुबमंहे ! नन्हे मुन्ने !
सटी मार ठीक कर दूंगा ! उसको है धिक्कार उठाये
जो तलवार अरे तेरे हित !

डेमेट्रियस

अच्छा तू है वहाँ ?

पक

आ जा मेरे स्वर को सुनता ! यहाँ नहीं, पदों
का तो फिर

खेल खुले में होगा आ जा ।

[प्रस्थान]

[लाइसेन्डर का पुन प्रवेश]

लाइसेन्डर

अरे जा रहा आगे-आगे, और मुझे ललकार रहा है,
जब पुकार सुन कर आता हूँ गायब होता,
अधम, बहुत चलना है जल्दी यह मुझसे तो ।
कितनी जल्दी चला किंतु यह कही अधिक ही -
जल्दी भागा ।
भटक गया हूँ ऊबड़ खावड़ अँधियारे में कर लूँ
मैं विश्राम यहाँ पर ।

[लेटता है ।]

अरे दिवस ! आलोकित आ जा ।
एक बार यदि तू दिखला देगा अपना मुख,
डेमेट्रियस नीच को क्षण भर में हूँदूंगा
और निकालूंगा मैं उससे अपना बदला ।

[सोता है । एक और डेमेट्रियस का पुन प्रवेश]

पक
डेमेट्रियस
हो हो हो ! कायर ! क्यों आता नहीं बता तू ।
हिम्मत हो तो आ जा । लेकिन
भागा जाता है तू तब से ! आगे आगे ! जगह बदलता,
क्यों न ठहरता, आ आँखों से आँख मिला कर देख
जरा तू ।

अरे कहाँ है ?

पक
डेमेट्रियस
अरे यहाँ हूँ ! इधर नहीं आता है क्यों तू ?
नहीं, खेल करता है मुझसे ?
दिन में जब मैं हूँ दर मैं हूँ तुझसे देख मिलूंगा
मुलाक़ात वह मैं हूँ वेहद तुझे पड़ेगी ।

अरे चला जा अपने रस्ते ।
 बहुत थका हूँ, कितनी शीतल है यह शैया ।
 क्यों न यहाँ लेटूँ कुछ क्षण को ।
 सुबह ढूँढ लूँगा फिर उसको ।

हेलेना

[लेटता है, सो जाता है । हेलेना का प्रवेश]
 अरी रात विश्रात । अरी ओ दुखद व्यथा की
 जननी, ओ अछोर निशि काली ।
 अरी घटा दे अपने तन को ।
 प्राची से वर्षण कर सुख का,
 जाऊँ मैं एथेन्स दिवस में,
 ऐसा सग छोड़ जाऊँ मैं जिसमें सब ही
 हाय घृणा करते हैं मुझसे ।
 ओ री निद्रा । तू जो अवसादों की पलकें
 कभी कभी मूँदा करती है,
 मुझे दूर ले चल इस मेरे विकल विश्व से ।
 [लेटती है, सो जाती है ।]

पक

अभी तीन है । आ एक और ।
 एक से दो दो, हो तब चार ।
 आ गई लो वह, शप्त उदास ।
 काम भी है बालक अविचार,
 विचारी नारी का जो हृदय
 विकल करता है पागल, मदय
 बड़ा चंचल है मन्मथ मीत,
 खेल का खेल, प्रीत की प्रीत ?

[हमिया का पुनः प्रवेश]

हमिया

कभी न इतनी श्रात हुई मैं,
 कभी न इतनी व्यथा उमड़ घिर आई ऐसी,
 ओस हाथ अगो मे कैसी शिथिल उदासी भरती मेरे,
 और झाड़ियो के काँटो मे पाँव छिप गये,
 कैसे चलूँ हाथ मे कैसे सरकूँ • रेगूँ •
 मन की होड़ नही कर पायेंगे पग मेरे
 आह यही मैं रुक जाऊँ दिन के आने तक
 हे भगवान ! अगर कोई हो युद्ध-द्वन्द्व तो
 लाइसेन्डर की रक्षा करना

[लिटती है, सो जाती है ।]

पद्म

धरती पर है
 सोये गहरी नीद,
 तेरे नयनो को दूँ आँज
 मनहर प्रेमी ! ले मैं सींच
 [लाइसेन्डर की आँखों पर रस निचोड़ता है ।]
 जागेगा जब
 खोल नयन
 होगा तब सच्चा सुख प्राप्त
 रूप चयन !
 उसी प्रिया के नयनो मे !
 गाँव गाँव मे है यह बोल,—
 जगते मे, जो जाये दिखाई
 वही चुने 'अपनी' कह, भाई !

जैक को जिल ।
नही टिल मिल,
अपनी घोड़ी अपने पाम,
फिर सब होगा ठीक ।
सोये गहरी नीद ।
[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[वही स्थान]

[लाइसैण्डर, डेमेट्रियस, हेलेना और हर्मिया सो रहे हैं।]

[टिटानिया और वोटम का प्रवेश। पीजव्लौसम, कौववैव, मीथ, मस्टर्डसीड और अन्य परि सेवक-सेविकाएँ साथ हैं।

पीछे ओवेरोन है, अदृश्य।]

टिटानिया आओ बैठो प्रिय इस फूलों की शैया पर,
मैं कपोल यह स्निग्ध तुम्हारे तनिक दुलारूँ,
इस चमकीले मधुर शीश पर प्राण तुम्हारे
लाओ यह गंधित गुलाब मैं इधर लगा दूँ,
और तुम्हारे सुदर लवे इन कानों पर मुद्रित कर दूँ
अपना चुबन,

ओ मेरे जीवन के चिर आनंद सुभग हे !

वोटम पीजव्लौसम कहाँ है ?

पीजव्लौसम यह हूँ तो मैं।

वोटम पीजव्लौसम, जरा मेरे सिर को खुजा दो। श्रीमान् कौववैव कहाँ है ?

कौववैव आज्ञा को प्रस्तुत हूँ कहिये।

वोटम श्रीमान् कौववैव ! अच्छे महोदय ! आप अपने शस्त्र हाथों में उठा ले और मेरे लिये लाल कमर की एक भाली मधुमक्खी को गोबरू के ऊपर मार डाले ! और श्रीमान् ! मेरे लिये शहद का

छत्ता ला दे । इस झूठ में बहुत मेहनत न करिये श्रीमान् । पर श्रीमान् । इतना ध्यान रखियेगा कि कहीं छत्ता न टूट जाये । मैं यह पसन्द नहीं करूँगा कि आप गहद के छत्ते के नीचे नहाकर चुचाते हुए लौट कर आये । महाशय मस्टर्डसीड कहाँ है ?

मस्टर्डसीड यहाँ देखिये, आज्ञा देवे ।

वौटम महाशय मस्टर्डसीड । मुझे अपना हाथ दे । अरे तकतलुफ छोड़िये आप भी ।

मस्टर्डसीड कहिये क्या इच्छा है श्रीमान् ।

वौटम कुछ नहीं श्रीमान्, मेरे अच्छे महाशय, वस जरा घुड़सवार कौबवेव को खुजाने में मदद देनी है । मुझे नाई के यहाँ जाना चाहिये श्रीमान् । मुझे लगता है मेरे चेहरे में बहुत ज्यादा बाल उग आये हैं, और मैं ऐसा नाजुक गधा हूँ कि जब मेरे बालों में गुलगुली मचती है तो खुजाने की जरूरत पड़ती ही है ।

टिटानिया आह प्राण । क्या गीत सुनोगे तुम इस बेला ?

वौटम गाना सुनने का मैं बड़ा शौकीन हूँ । सँडासी और हड्डियाँ जुटा लो ।

टिटानिया प्रियतम, बोलो । क्या कुछ खाने की इच्छा है ?

वौटम सचमुच । चारे का गट्ठर । अरे मैं सारी तुम्हारी सूखी जई यो ही चबा जाऊँगा । वैसे मुझे सूखी घास मिल जाये तो अच्छा रहे । अच्छी घास । मीठी घास । हे कहीं ? किमी के पास ।

टिटानिया मेरी मेवा में है परी एक ऐसी जो
साहसपूर्ण हृदय रखती है, उसे भेज कर अभी
गिलहरी के मगह में मँगवाती हूँ
प्राण तुम्हारे हेतु नये अखरोट मधुरतम ।

वौटम मुझे तो मुट्ठी दो मुट्ठी सूने मटर मिल जाये । पर मैं प्रार्थना

करता हूँ, कोई मुझे हिलाना नहीं, मुझे नीद-सी आ रही है ।
 टिटानिया : सो लो प्रियतम ! मैं अपने भुजबधन मे
 तुमको बाँधूंगी । जाओ परियो ! फैल जाओ
 हर ओर, यहाँ एकान्त करो तुम ।

[परियो का प्रस्थान]

ऐसे ही सुरभित वुडवाइन कलि अलवेली
 गध कुसुम प्रिय हनीसकिल का आलिंगन करता है
 प्रियतम !

और सिरपेचे की लता ऐम तरु की उँगलियाँ
 पकड भूमती ।

आह प्रेम करती हूँ तुमसे कितना प्रिय मैं,
 मोहित हूँ मैं तुम पर कितनी !

[वे सोते हैं ।]

[पक का प्रवेश]

ओवेरोन (बढ कर) स्वागत प्रिय रोविन ! क्या देख रहे हो
 मधुर दृश्य यह ?

इसके उत्कट तीव्र प्रेम को देख मुझे करुणा आती है ।
 इस वनात मे इसी घृणित से महा मूर्ख से मिलनातुर थी
 तभी इसे डाँटा था मैंने, दूर कर दिया,
 देखो इसने इसकी रोमिल कनपटियो को
 कैसे नये मुगधित फूलो मे दुलार कर यहाँ सजाया !
 वह नीहार, जो कि कलियो पर पीन मघन हो
 प्राची का सा रत्न बना जगमग सा करता
 इस छोटे से विकल फूल के नयन बीच में अश्रु बन गया,
 क्योंकि रो रहा है अपना अपमान सोच वह !

जब मैंने स्वेच्छा मे इसको छेड़ दिया था,
 इसने नम्र वचन कह मुझसे कहा—‘शांत हो ।’
 तब मैंने वह बालक माँगा,
 तुरत दे दिया इसने मुझको, और शीघ्र ही
 परी भेज दी अपनी उसको परीदेश से ले आने को ।
 अब बालक पाया है मैंने,
 अब यह इसका दृष्टिदोष अति घृणित दूर
 कर दूँ मैं इससे ।

प्रिय पक ! इस एथेन्स के वासी के सिर से यह
 नकली चेहरा करो दूर तुम
 जब जागेगी परी देश की रानी तब फिर यह जब जागे
 लौटे यह एथेन्स, भूल जाये सब
 इस रजनी की घटना जैसे कोई भयद स्वप्न था ।
 पर पहले मैं परियों की रानी को मुक्त करूँ वधन से ।
 हो जा, जैसी पहले थी तू ।
 देख वही जो दृष्टि योग्य हो ।
 शशि-कलिका का मदन-पुष्प पर
 ऐसा है अधिकार, भोग्य ओ ।
 मेरी टिटानिया अब जागो, मेरी रानी,
 मेरी प्रेयसि ।

टिटानिया मेरे ओवेरोन ! स्वप्न देखे मैंने क्या ।
 मुझे लग रहा जैसे किसी गंधे पर मोहित हुई हाय में ।
 ओवेरोन वह देखो प्रिय पात्र तुम्हारा ! मोता तो है ।
 टिटानिया यह मग कैसे हुआ । घृणा होती है मुझको
 इसका यह आनन निहार कर ।

ओवेरोन रहो शान्त क्षण । रोबिन । इसका शीश बदल दो ।
 टिटानिया । सगीत छेड़ने की आज्ञा दो ।
 पचेन्द्रिय की तन्मय निद्रा से भी गहरी
 मरण सदृश विस्मृति जिससे निस्सृत हो स्वप्निल ।
 टिटानिया . छेड़ो छेड़ो । गीत अरे ऐसा छेड़ो जो
 इन्द्रजाल सा निद्रा में आकर दुलरा दे ।

[सगीत, स्तब्धता]

पक अब जब तुम जागो तो अपनी मूर्ख दृष्टि से ही
 सब देखो ।

ओवेरोन गाओ गाओ । आओ मेरी रानी आओ
 मेरा हाथ पकड़ कर त्यागो इस धरती को
 जहाँ विनिद्रित है यह प्राणी ।
 हम तुम फिर मिल गये आज है,
 कल हम आधी रात प्रिये । जब गहरायेगी
 ड्यूक थीसियस के रमणीय भवन में सुख से
 मगलमय जयमय नाचेंगे ।

रे भविष्य में आने वाली प्रिय संततियों
 को आशीष मनोहर देंगे,
 सग थीसियस के यह सच्चे प्रेमी दोनों
 युगल हर्ष में पुलकित होंगे ।

पक परिस्तान के राजा । देखो, चला तिमिर अब
 मोर-विहग का सुन पड़ता है मीठा कलरव ।

ओवेरोन मेरी रानी । स्तब्ध उदामी दूर छोड़ दें
 अब हम निशा तिमिर मा उसको त्यागो आओ
 हम भूमण्डल की परिक्रमा कर सकते हैं

टिटानिया

यायावर गति से भी त्वर गति से, अब आओ
 आओ स्वामी चले उड चले,
 कैसे हुआ रात मे यह सब ?
 इन मर्त्यो के साथ भूमि पर सोती कैसे
 पाई गई कहो मे ऐसे ! क्या रहस्य नव !

[प्रस्थान]

[नेपथ्य में श्रुती नाद । थीसियस, हिप्पोलिटा,
 एजियस तथा सेवको का प्रवेश]

थीसियस

जाओ कोई और बुला लाओ वनचर को ।
 कार्य पूर्ण हो गया हमारा ।

लो दिन का आलोक लगा है छन-छन आने,
 मेरी प्रिया शिकारी कुत्तो का संगीत, सुनेगी भीषण,
 पश्चिम की घाटी मे गुजित, उन्हें छोड दो,
 दौडा दो, कहता हूँ जल्दी, वनचर ढूंढो !

[एक सेवक का प्रस्थान]

सुंदरि रानी ! हम गिरि शिखर वहाँ है, उस तक चले
 चलेगे

और वहाँ मे संगीतात्मक प्रतिध्वनियो को श्रवण करेंगे,
 कुत्तो का कठोर स्वर गूंजेगा वह कैसा !

हिप्पोलिटा

एक बार मे संग गई थी

हरक्युलीज, औ' कंडमैस के प्रिय !

जब म्पाटी के भयद शिकारी कुत्तो मे था
 घेरा उनने भालू एक व्रीट के वन मे ।

वैसा हाँका नही मुना है मेने अब तक ।

कुञ्जो मे, नभ मे, निर्भर मे, ठोर-ठोर मे
 लगता था ज्यों एक, एक थी गेर उठ रही,

लगता था प्रत्येक बोलता था चिल्लाता
उत्तर प्रत्युत्तर सा देता, ऐसा मधुर सुगर्जन,
ऐसा गीतात्मक लय मादक कोलाहल वह
फिर न सुन सकी ।

थीसियस

अरे गिकारी कुत्ते मेरे भी तो रानी
है स्पार्टा की उसी नस्ल के,
ऐसे हैं ये, लम्बे इनके कान लटकते ऐसे नीचे
झाडा करते हैं प्रभात की नयी ओस को ।
मुड़े हुए घुटने हैं इनके, और गले में मांस लटकता
थेसाली वृषभों सा इनके,
दौडा करते धीरे पीछे, किन्तु एक दूजे के पीछे लगे-
लगे ये

ऐसे चलते जैसे वजते हैं वे घटे ।
ऐसी चिल्लाहट लयमय न सुनाई देगी,
श्रृ गी का निनाद भी उसको पकड़ न सकता ।
थेसाली, स्पार्टा कि क्रीट, हाँ नहीं कही भी ।
मुनकर स्वयं जाँच लेना तुम ।
ठहरो ! धीरे ! यहाँ कौन यह देवी वन प्राणी सोते हैं ।
महाराज ! यह तो मेरी बेटी सोती है,
यह है लाइसैन्डर, डेमेट्रियस यह है, यह है हेलेना जो
वयोवृद्ध नेडर की दुहिता,
ताज्जुव है यह चारों साथ यहाँ कैसे है ।

एजियस

थीसियस

निस्सदेह जगे हैं यह सब भिनमारे ही
आज ग्रीष्म ऋतु का त्यौहार मनाने मिल कर,
और हमारा आयोजन सुन, ससम्मान आये हैं

अपना आदर करने ।

किंतु एजियस ! क्या न आज ही अरे हर्मिया को
अपना उत्तर देना है ?

अपना निर्णय उसे आज ही तो कहना है ?

एजियस हाँ श्रीमान् ! आज ही है वह दिवस सुनिश्चय ।

थीसियस : शिकारियों को आज्ञा दो वे शृ ग वजा कर
इन्हे जगा दे ।

[नेपथ्य में शृ गी नाव और पुकारना । लाइसेन्डर, डेमेट्रियस, हेलेना और
हर्मिया जागते हैं और उठ जाते हैं ।]

नमस्कार ! अब सत दिवस का उत्सव बीता,
वन के पक्षी युगल लगे हैं होने क्या अब ?

लाइसेन्डर क्षमा करे श्रीमत

थीसियस चलो हटो अब ! अरे खडे हो,
मुझे ज्ञात है तुम दोनों प्रतिद्वन्द्वी प्रेमी,
फिर जग मे यह मधुर मिलन कैसे आया है ?

अरे घृणा क्या ईर्ष्या से इतनी सुदूर है
जो सोती यो घृणा परस्पर मिल कर ऐसे
और शत्रुता का कोई भय शेष नहीं है ।

लाइसेन्डर हे श्रीमत् ! कहूँ क्या मैं हूँ स्वयं चमत्कृत,
अर्द्धमुप्त हूँ या है अर्द्ध जाग्रतावस्था मेरी सच यह ?
किंतु शपथ है, मैं कह सकता नहीं कि कैसे
आ पहुँचा मैं यहाँ न जाने ।

अरे मृत्यु ही कहता हूँ मैं जितना पाता
नोच विगन की,
शायद यह मंत्र यो है दृष्टा कि मैं था

आया यहाँ हमिया के सग ।
 और हमारा यह विचार था करे पलायन
 हम एथेन्स से
 दूर, दूर इतने कि यहाँ के नियम नहीं
 लागू हो हम पर ।

हम इन बाधाओं से बच कर भाग जा सकें ।

एजियस . बहुत हुआ प्रभु ! बहुत हुआ अब,
 न्याय, नियम इस पर प्रभु ! अपना अब बरसाये,
 दण्ड चाहिये दण्ड क्योंकि अपराध हुआ है ।
 कर जाते ये दूर पलायन, औ' डेमेट्रियस !
 इस प्रकार मुझको तुमको यह खूब बताते,
 तुम्हें न मिलती पति और मुझको मेरी अभिलाषा
 निश्चय,

मैं चाहता यही कि वह हो पति तुम्हारी ।

डेमेट्रियस . हे श्रीमत ! सुदरी हेलेना ने मुझको
 बतलायी थी इनके इस विचार की बातें ।
 इनके वन में आने की सुन हुआ क्रुद्ध मैं
 पीछे भागा इनके, और सुदरी हेलेन आई पीछे ।
 पर श्रीमान् ! जानता कुछ भी नहीं किंतु मैं
 क्या थी ऐसी शक्ति, शक्ति वह क्या थी ऐसी—
 जिससे प्रेम हमिया के प्रति जो था मेरा
 गया वर्ष सा पिघल और लगता है अब तो
 बचपन का सा खेल एक कभी जो बहनाता था ।
 मेरे मन के सारे सद्गुण, श्रद्धा सारी,
 मेरे दृग का हर्ष और मजिल भी अन्तिम

वनी यही हेलेना ! हे प्रभु ! इससे ही तो
 देखी थी हमिया नहीं, तब निश्चितार्थ था
 हुआ, किंतु ज्यो
 ज्वर मे भोजन भी अप्रिय लगने लगता है,
 किंतु स्वस्थ होने पर स्वाभाविकता से जो
 फिर अच्छा लगने लगता है,
 मुझे प्यार हेलेन का, केवल वही चाहिये
 और उमी के प्रति मेरा यह प्यार अमर हो !
 सुघर प्रेमियो ! मिले भाग्य से ही तुम

थीसियस

सुख से,
 अब छोड़ो यह विषय न इस पर और बात हो !
 और एजियस ! अभिलाषा वह
 सकल तुम्हारी पूर्ण करूँगा मैं, मंदिर मे
 इन दोनों युगलो को भी अनतवधन मे
 बाँधूँगा, जब स्वयं स्नेहवधन मे मैं भी
 बँध जाऊँगा ।

अरे प्रात तो बीत चला, अपना शिकार भी
 नहीं जमेगा, टालो उसको,
 चलो चले एथेन्स ! तीन हम और तीन ये
 दावत होगी बडे ठाठ की, मुख बरमेगा ।
 हिप्पोलिटा ! चलो हे प्रेयसि !

[थीसियस, हिप्पोलिटा और सेवकों का प्रस्थान]

डेमेट्रियस

: यह सब जाने दिखनी है लघु, धुंधली-धुंधली
 जैसे वे मुद्गर के पर्वत में घन गये ।

हमिया

विस्फारित नयनों मे मैं क्या देख रही हूँ

सब कुछ दो दो सा दिखता है ।
 हेलेना यही मुझे भी तो लगता है ।
 डेमेट्रियस रत्न सा मुझको प्राप्त हुआ है,
 मेरा है वह, मेरा ही है ।
 डेमेट्रियस क्या सचमुच हम जाग रहे हैं ?
 लगता है हम अभी सुप्त हैं, स्वप्न देखते ।
 क्या न ड्यूक आये थे सचमुच अभी यहाँ पर,
 क्या न उन्होंने हमें बुलाया अपने पीछे ।
 हर्मिया : और पिता भी तो थे मेरे ।
 हेलेना और सग थी हिप्पोलिटा ! साथ थी उनके ।
 लाइसैंडर वे सब मंदिर में हैं हमको बुला गये न ?
 डेमेट्रियस तब तो हम सब जाग रहे हैं । चलो चले अब ।
 अपने सुपने हम दुहराये ।

[प्रस्थान]

वॉटम (जाग कर) जब मेरे बोलने का मौका आयेगा, मुझे पुकारना ।
 मैं उत्तर दूंगा । मुझे आगे बोलना है—‘अति सुन्दर पाइरैमस ।’
 अरे हाय ! हड़थो हो ! पीटर क्विन्स ! फ्लूट, धौकनी बनाने
 वाले ! स्नाउट, ठठरे ! स्टारवेलिंग ! हे भगवान ! सब छिप
 गये ? और मुझे सोता छोड़ गये । मुझे भी क्या अजीब सुपना-
 सा हुआ ! किमी आदमी की अक्ल में तो ऐसा सुपना क्या आयेगा ?
 आदमी एक गधा हो तो है, अगर अब वह अपने सुपने को बताता-
 पूछता फिरे ! मुझे लगता है मैं था एक इंसान तो कोई क्या
 बता सकता है—मुझे लगता है, मुझे लगता है मेरे पर आदमी
 बेवकूफ ही तो है, वह अगर कहे कि वह बता देगा कि मैं क्या हो
 गया था ! आदमी की आँखों ने नहीं मुना होगा, न कानों ने

देखा होगा, न हाथों ने चखा होगा, न जीभ ने सोचा होगा, न दिल ने कहा होगा—ऐसा था मेरा सुपना । कोई क्या बतायेगा । मैं इस सुपने पर पीटर क्विन्स से एक लंबी गाने लायक कविता लिखवाऊँगा । उसका नाम होगा बोटम का सुपना, क्योंकि उसका कोई तला^१ न होगा, और उसे मैं नाटक के अंतिम भाग में गाऊँगा, ड्यूक के सामने । अरे उसे खूब जोरदार बनाने के लिये उस स्त्री^२ की मौत पर गाऊँगा ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[एथेन्स, क्विन्स का घर]

[क्विन्स, पलूट, स्नाउट और स्टारवेलिंग का प्रवेश]

क्विन्स क्या तुमने बोटम के घर किसी को भेजा ? क्या वह घर लौट आया ?

स्टारवेलिंग उसकी तो कोई खबर ही नहीं । बेशक उसे तो वे लोग ले गये ।

पलूट अगर वह नहीं आ सकता तो नाटक भी मारा गया । उसके बिना क्या वह आगे चल सकता है ?

क्विन्स मुमकिन नहीं । सारे एथेन्स में उस जैसा आदमी नहीं मिलेगा जो पाइरेमस का पार्ट अदा कर सके ।

पलूट नहीं जी ! यह तो है । कोई एथेन्स में तो उस जैसा अत्यन्त दम्तकार नहीं मिलेगा ।

१ तला—अगरेशी में शब्द है बोटम । शेक्सपियर ने यहाँ शब्दों का खेल किया है ।

२ स्त्री यानी नाटक की नायिका यिम्बो ।

द्विन्स लाजवाब आदमी था । आवाज की मिठास में तो समझो जैसे कोई नारी हो ।

फ्लूट नारी नहीं, कहिये भारी । भगवान न करे, नारी वह कहाँ ।

[स्नग का प्रवेश]

स्नग कलाकारो । ड्यूक मन्दिर से आ रहे हैं और उनके साथ दो या तीन और श्रीमत् हैं जिनका भी अपनी स्त्रियो से विवाह हुआ है ।

अगर हमारा खेल जम जाता तो किस्मत बन जाती ।

फ्लूट हाय प्यारे भगडालू बौटम । जिन्दगी में छ आने' रोज खो डाले तुमने । क्या तुम ऐसा कर सकते थे ? अगर ड्यूक उसे इतना न देते, पाइरेमस का पार्ट करने पर तो जनाव मैं नाक कटा देता, फाँसी पर झूल जाता, पर उसके लिये क्या वह योग्य नहीं था ।

पाइरेमस को छ आने । कुछ भी नहीं थे ।

[बौटम का प्रवेश]

बौटम कहाँ गये मेरे दोस्त । कहाँ है मेरे दिलोजिगर ।

द्विन्स बौटम । सुन ली भगवान ने । कैसा दिन है । भाग खुल गये ।

बौटम कलाकारो । मैं आपको अजीब बातें बताऊँगा, पर मुझसे पूछना नहीं कि क्या है ? क्योंकि अगर मैं वह भी बता दूँ तो अमल का एथेन्सवासी नहीं हो सकता । जैसे जो जो हुआ, वह मैं आपको सब बता दूँगा ।

द्विन्स प्यारे बौटम । मुनाओ । मुनाओ ।

बौटम एक लपज भी मेरे बारे में इस वक्त नहीं । मैं सिर्फ यह बता-ऊँगा कि सुन लो । सुन लो । ड्यूक ने खाना खा लिया है । कपड़े पहन लो, दाटियाँ नूत लो, जूतों में नये फीते डाल लो, और फॉरन महल पहुँचो । किम्मा कोनाह यह है कि नाटक

हमारा होगा, उसकी माँग की गई है। हर हालत में थिस्वी के कपड़े साफ धुले होने चाहिये। जो शेर कर पार्ट कर रहा है वह अपने नाखून न काटे, क्योंकि वह ही शेर के पजो की जगह काम दे जायेंगे। प्यारे कलाकारो ! अभिनेताओ ! कोई भी प्याज-लहसुन न खा लेना, क्योंकि हमारे मुख से बदबू नहीं आनी चाहिये वहाँ। मुझे यकीन है कि लोग कहेंगे आखिर मे—कैसा सुंदर सुखांत नाटक है ! एक लपज नहीं ! चलो ! फौरन ! चलो ! !

[प्रस्थान]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

[एथेन्स—थीसियस का प्रासाद]

[थीसियस, फाइलोस्ट्रैट, हिप्पोलिटा, लार्डगरा और सेवकों का प्रवेश]

हिप्पोलिटा प्राण थीसियस ! यह प्रेमीगण जो कहते हैं,
वह सब कितना अद्भुत है सच !

थीसियस अरे सत्य से कहीं अधिक आश्चर्यजनक है !
इन प्राचीन कथाओं, इन परियों की बातों
में मुझको विश्वास नहीं होता है बिल्कुल ।
प्रेमीजन और पागल, इनके तो दिमाग हैं
उत्तेजित रहते ऐसे ही ।

उन्हें अजीब-अजीब शक्ल दिखती रहती है ।
शात विवेक न जिसको पाता सोच वही कहते हैं वे तो !

पागल, प्रेमी, कवि—तीनों की
होती है कल्पना तीव्र ही !

नहीं नरक में जितने वे शैतान, देखते किसी एक को,
वह पागल है ।

प्रेमी उच्छृंखल, हेलेन सी रूपसि की छवि
किसी कँजरिया के चेहरे में ही पा लेता !

कवि की आँखें,

विस्फारित हो किसी मधुर उन्मादाप्लावित,
व्योम घरा को हैं निहारती, और अवनित से

फिर अवर तक,
और कल्पना जैसे अनजाने रूपों को देती है आकार
आप ही
कवि-लेखनी उन्हें कर देती सगुण, शून्य को छवि देती है,
नामधेय रचती है उमको मृत्यु बनाकर ।

सुख की यदि आशका है तो
वह अवश्य करता है प्रस्तुत ।

किंतु निशा में, कर कल्पना किमी भय की वह
सहज किसी भाडी को भालू कह सकता है ।

हिप्पोलिटा किंतु रात की कथा समस्त कह रहे जो ये
उसमें क्या इन सबके ही मस्तिष्क एक से
हुए, कि सब की हुई कल्पना एक सदृश ही ?
और कथा में तारतम्य भी तो पूरा है,
कुछ भी हो आश्चर्यजनक है, स्तुत्य मन्य ही ।
थीसियस लो प्रेमीजन आये, कैमे है प्रमत्त वे ।

[लाइसेन्डर, डेमेट्रियस, हर्मिया और हेलेना का प्रवेश]
मित्रो ! हो आनंदित तुम सब ! और प्रेम के
नये-नये दिन रजन करे तुम्हारे मन का ।

लाइसेन्डर हमने अधिक आपको सुगुहा स्वामी, गारव
बटे आपका ।

थीसियस - आओ ! होगा माम्क नृत्य क्या हम देख अव ?
अरे तीन घंटे का लम्बा समय मामने पड़ा हुआ है,
भोजन करके सोने तक के बीच समय में ।
कहाँ हमारे आनंदोत्सव का है बोनों नियत प्रवक्ता !
क्या आनन्द यहाँ प्रस्तुत है ?

क्या है नाटक नहीं एक भी जो कि हमारे
इन लम्बे घटो को सुख से ही सरका दे ?
फाइलोस्ट्रैट कहाँ है उसको यहाँ बुलाओ ।
प्रस्तुत हूँ, थीसियस शक्तिशाली महान है ।
आज साध्य बेला के हित क्या रजन है अब ?
मास्क है कि सगीत । किस तरह काल बिताये
यदि कोई है नहीं मनोरजन कैसे हो ?
यह सक्षिप्त एक सूची है
जिसमें रजन के साधन हैं वर्णित हे प्रभु ।
जो चाहे श्रीमान् बतायें, वही प्रथम देखेंगे हम सब !

[कागज देता है ।]

थीसियस (पढ़ता है ।) सैन्टॉरो' का युद्ध । इसे गायेंगा अपने
तारो के बाजे पर एक नपुसक आ कर
है कोई एथेन्स निवासी ।
नहीं यह नहीं, मैं कह चुका उसे पहले ही प्रेयसि से हूँ,
अपने स्वजन हरक्युलिस की गौरव गाथा में ।
(पढ़ता है ।) नशे । नशे में डूबे वैकेनल' का
दगा जिसमें क्रोधित हो कर
धूम निवासी गायक गण का वध करते हैं वे पागल में,
बहुत पुरानी चीज़ हो गई । पहली बार विजेता बन कर
मैं थीबीज नगर में आया, तब भी यही हुआ था
अभिनय !

(पढ़ता है ।) ज्ञान, ज्ञान के स्वर्गवास पर

१ प्रीत में प्रहं मनुष्य प्रहं पशु माने जाते थे । गाते थे ।

२ शान दानना-प्रधान उन्मत्त उपदेदतागण ।

कला-देवियों का वह रोदन ।
 ज्ञान बुभुक्षित हो मरता है ।
 यह कोई है तीव्र व्यग, आलोचन होगा,
 इस विवाह के उत्सव में तो नहीं जँचेगा ।
 (पछता है ।) पाइरैमस थिस्वी की प्रेम कथा, यह क्या है ?
 दुखमय है क्या या सुखात । सुख भी श्री' दुख भी ?
 ऊवाने वाली सक्षिप्त भला यह क्या दोनों ही ?
 वाह । वाह । यह गर्म बर्फ है, अद्भुत श्री'
 आश्चर्यजनक कैसा है हिम जो ।

फाइलोस्ट्रेंट

अजब सुरीले और बेसुरे का मिलान है ?
 दस शब्दों का नाटक है प्रभु ।
 इतना छोटा नाटक मैंने कभी न देखा ।
 किंतु वही दस शब्द बहुत लंबे लगते हैं,
 मुश्किल हो जाता है उसको देख भेदना,
 सारे नाटक में न एक भी शब्द कही
 उपयुक्त मिलेगा, नहीं एक भी
 अभिनेता है ठीक, अत है सुखद क्योंकि
 पाइरैमस करता आत्मघात है ।
 देख चुका हूँ, प्रभु । इमका, मैं स्वयं रिहर्सल,
 और कहूँगा, मेरी आँखें हुई पनीती,
 किंतु न बरसा पायेंगी आँखें फिर ऐसे
 अश्रु हास के, जैसी उसे देख कर आती हूँमी जोर की ।
 योसियस : अरे कौन है जो उसका अभिनय करते हैं ?
 फाइलोस्ट्रेंट : है मजूर, एथेन्स नगर के मेहनतकश वे,
 दस्तकार हैं,

कभी बुद्धि का श्रम न उठाया लगता उनने ?
 अब जी तोड़ लगन से जुटकर यह नाटक तैयार किया है
 प्रभु ! विवाह के लिये आपके,
 रजन करने ।

योसियस तब हम उसे अवश्य, बुलाकर के, देखेंगे ।
 फाइलोस्ट्रेंट नही, वीर प्रभु ! वह आपके योग्य तो सचमुच
 कभी नहीं है । स्वयं सुन चुका हूँ सारे को ।
 वह तो कुछ भी नहीं, नहीं है कुछ भी, कह दूँ ।
 हाँ उनके यदि आप इरादे देखें, उनकी नीयत देखें
 उसमें गायद हो तफरीह आपकी थोड़ी ।
 बड़ी बड़ी मेहनत से रट कर याद किया है नाटक उनने,
 केवल करें प्रसन्न आपको, जी वहलाये,
 यही हृदय में भाव रहा है ।

योसियस मैं अवश्य देखूँगा उनका नाटक, क्योंकि कभी भी
 अनुचित होता कुछ न वहाँ पर
 जहाँ सादगी और श्रद्धा है तत्पर रहते ।
 जाओ, उनको यहाँ बुलाओ,
 आसन ग्रहण तुम करो अपना अहे देवियो ।
 [फाइलोस्ट्रेंट का प्रस्थान]

हिप्पोलिटा : नही, चाहती मैं कि दीनता अधिक भार ले,
 और तुम्हारी सेवा में कर्तव्य नष्ट हो ।

योसियस आह नहीं होगा कुछ ऐसा मेरी प्रेयसि ।

हिप्पोलिटा वह कहते हैं वे तो कुछ भी नहीं जानते ।

योसियस . हम वह 'कुछ भी नहीं' देख कर
 भी उनको देंगे अपना तो घन्यवाद ही,

क्या न दया इतनी हम उन पर कर सकते हैं ?

उनकी भूलो को नगण्य मानेंगे हम तो
यही हमारी क्रीडा की सौम्यता बनेगी ।
नहीं जिसे कर सकता है कर्त्तव्य दीन मन,
गौरव का सम्मान शक्ति में उसे परखता
गुण की चिता त्याग, प्रेयसी ।

मैं आया हूँ यहाँ, अनेको विद्वानों ने
मेरा स्वागत किया योजनाएँ रट-रटकर,
पर जब समुख आते मेरे काँप गये वे पड़ कर पीले,
अटक-अटक कर बोल सके वे हकलाये से,
भय ने उनकी वाणी की वह सहज तीव्र गति उनसे छीनी,
और अतः मैं मूक बने वे चले गये, स्वागत भाषण भी
बोल न पाये,
प्रेयसि ! सुनो ! बात का मेरी तुम विश्वास करो,
मैंने तो

उम विमौन में भी अपने स्वागत का अनुभव
किया क्योंकि वह भय था क्या ? कर्त्तव्य परायण
मकोचों का एक प्रदर्शन,

उक्ति-चमत्कारों में गर्भित सभाषण का
रस मैंने पाया उन नम्र अवोलेपन में,
प्रिये ! प्रेम और वह सादगी अवाक् मुझे तो
लगता है उँडेलते अपने भावों को मन की
गहराई में, मग्न कुछ ही
कर देने हैं प्रगट, नहीं रहती कुछ बाधा ।

[फाइलोस्ट्रेंट का पुन प्रवेश]

फाइलोस्ट्रेंट

स्वामी हो प्रसन्न । आता है सूत्रधार अब
और सुनायेगा अपना वक्तव्य प्रथम वह ।

थोसियस

आने दो, उसको आने दो ।

[तुर्य निनाद]

[प्रथम वक्तव्य के रूप में क्विन्स का प्रवेश]

[प्रथम वक्तव्य]

अप्रसन्न करते हैं यदि हम,

तो वह नेकनीयती से ही,

यही सोचिये, क्योंकि नहीं हम

अप्रसन्न करने आये हैं ।

नेकनीयती लाई हमको, और यहाँ पर

अपना सादा कौशल सारा

दिखलाते हैं, और अत का

अपने यही सत्य-उपक्रम है ।

अत सोचिये, हम विरोध पाते हैं केवल,

हम न यहाँ आये हैं सचमुच

सोच, आपको हम कर सकते

हैं प्रमन्न सतुष्ट हृदय से,

किंतु हमारी नीयत यह है,

सब कुछ से प्रसन्न हो श्रीमन् ।

यह अपना तो भाव नहीं है ।

पछताएँ श्रीमान् हृदय मे ।

अभिनेता प्रस्तुत है सारे ।

और देख कर उनका अभिनय

जान सकेगे आप स्वयं ही,
जो कुछ भी जानने योग्य है ।

थोसियस यह आदमी एक बात पर भी नहीं जमता ।

लाइसेन्डर उसने तो वक्तव्य को उजड़ु घोड़े-सा दौड़ा दिया । रुकना
उसे आता ही नहीं । श्रीमान् ! यह भी नीति की बात है । बोलना
काफी नहीं, सच बोलना चाहिये ।

हिप्पोलिटा वक्तव्य ऐसे बोला जैसा बच्चा रटकर सुना गया, आवाज
तो आई, पर समझ में कुछ न आया ।

थोसियस भापण था कि झनझनाती जजीर ! टूटी नहीं, पर कहीं
एक-सी नहीं । अब आगे कौन है ?

[पाइरैमस, थिस्वी, दीवाल, चांदनी और शेर का प्रवेश]

[वक्तव्य]

हे श्रीमान् ! बहुत सभव है
अचरज करे देख यह नाटक,
पर आश्चर्य और भी करिये
जब तक मृत्यु नहीं सुलभा दे
सब रहस्य को, वह मनुष्य है
पाइरैमस, जानते आप है,
यह मुदर स्त्री निश्चय थिस्वी है,
यह मनुष्य जिम पर दिखता है
लगा हुआ चूना श्री' ककट
है दीवाल एक, यह ही है
वह दीवाल नीच जो इन दो
मुख्य प्रेमियों के मिलने में
जुड़ी बीच में बाधा बन कर ।

इस दीवाल बीच है छोटा

एक छेद भी, वे बेचारे

इसमे से बातें करके ही

अपने जी को बहलाते हैं ।

कोई भी इस पर ऐसा आश्चर्य न करिये ।

यह मनुष्य यह लालटेन ले खड़ा हुआ जो

काँटो की भाड़ी गह, देखे इस कुत्ते के पास कौन है ?

है चाँदनी, अरे देखें तो, स्वयं चाँदनी ।

पास निनस की समाधि के ये दोनों प्रेमी

वहाँ चाँदनी में मिलते थे विना हिचक के,

और प्रेम करते थे मिल कर ।

यह विशाल पशु, नाम सिंह है जिसका, इसको

देख, रात्रि में आती थी थिस्वी जब मन में

भर विश्वास, डर गई, भागी सहसा उल्टे

पाँव, किन्तु चोगा उसका गिर गया भूमि पर,

इसी नीच श्री' हिस्ल सिंह ने

अपने मुख से, रे रुधिरार्द्र होठ धर अपने

उस चोगे पर रक्त लगाया ।

आया पाइरैमस वह सुदर दीर्घकाय

अति स्वस्थ तरुण जब

देखा उसने उसकी प्यारी थिस्वी का

चोगा घरती पर पड़ा हुआ था लोहू भीगा,

खीच भयानक रक्त पिपानु खड्ग भट उसने

अपना निर्मम,

परम वीरता से अपने खोलते वक्ष में

वही घुसाया,
 थिस्वी वही पास में भुरमुट में तरुओ के
 जो करती थी खड़ी प्रतीक्षा,
 आई, देखा, आह ! खीच प्रिय की कटार ली
 उसने अपनी छाती में ली भोक वेग से
 और ! मर गई ।
 अब दीवाल, चाँदनी औ' ये सिंह आदि औ' दोनो प्रेमी
 खेल दिखाये ।

[प्रथम वक्तव्य, पाइरैमस, थिस्वी, शेर और चाँदनी का प्रवेश]
 थोसियस अरे ! क्या कही यह शेर तो नहीं बोलेगा कुछ ?
 डेमेट्रियस • क्या आश्चर्य है श्रीमान् ! जहाँ कई गधे बोलते हैं, वहाँ
 एक सिंह क्यों नहीं बोल सकता ?

दीवार इस नाटक में ही यह भी आता है ऐंसे,
 मैं, जिसका है नाम स्नाउट, दीवाल बना हूँ,
 वह दीवाल, देखिये मुनिये, जिसके तन में
 एक छेद है या दरार है, जिसके द्वारा
 प्रेमी पाइरैमस औ' थिस्वी बहुधा आ कर
 बहुत गुप्त ढंग से कानाफूसी करते हैं ।
 यह चूना, ककड़, पन्थर बनाने हैं सब
 कि हूँ वही दीवाल देखिये ! सच है मैं ही ।
 यह दरार है, जालिम कैसी, इसमें से ही
 डरे हुए प्रेमी वे दोनो घात करेंगे ।

थोसियस आप क्या चाहते हैं कि चूना और ककड़ और अन्धा
 बोले ?

डेमेट्रियस इतनी अक्लमंद मूढ़-मूढ़ में किया विभाजन तो मैंने कही

सुना ही नहीं था श्रीमान् ।

थोसियस पाइरैमस दीवाल के पास आ रहा है । सुनिये, सुनिये ।

[पाइरैमस का पुनः प्रवेश]

पाइरैमस : अरी रात । ओ रात भयकर । ओ री काले रग
की काली स्याह रात री ।

अरी रात । तू जो रहती है सदा नहीं जब
दिन रहता है ।

अरी रात । ओ रात । हाय री हाय हाय री ।

मुझको डर है कही वचन वह

भुला गई थिस्वी क्या अपना ।

ओ दीवाल । अरी ओ प्यारी । ओ प्यारी दीवाल,
मनोहर ।

तू मेरे औ' उसके पूज्य पिता की धरती

के जो बीच खड़ी है करती हुई विभाजन ।

ओ दीवाल । भीत ओ । प्यारी । ओ मनहर तू ।

दिखा मुझे अपनी दरार जिसमे से मैं अब

चमका सकूँ आँख यह अपनी, भौंक सकूँ कुछ ।

[दीवाल उँगलियाँ उठाती है ।]

धन्यवाद । ओ करुणामय दीवाल । भरी सैन्यो से तू,

प्रेम देवता इसके लिये करेगा तेरी रक्षा अच्छी ।

है क्या देख रहा हूँ मैं अब ? थिस्वी आई नहीं

यहाँ पर ?

ओ दीवाल कमीनी । तुझमे से मैं कुछ भी

देख नहीं पाता अच्छाई,

तेरे पत्थर हो अभिमान कि मुझको धोखा देती ।

ओ दीवाल ! अधमतम है तू !

थीसियस मेरी राय में, अगर दीवाल में अक्ल होगी तो जवाब में जरूर गाली देगी !

पाइरैमस नहीं श्रीमान् ! ऐसा कैसे हो सकता है ! दीवाल क्यों बोलेगी यहाँ ? 'अधमतम है तू', के बाद तो थिस्वी को बोलना है। लीजिये वह आ गई। अब मैं उसे दीवाल के छेद में से देखूंगा। आप देखियेगा। मैंने कहा न यहाँ तो बिल्कुल वही होगा जो ठीक है। लीजिये वह आ पहुँची !

[थिस्वी का पुनः प्रवेश]

थिस्वी ओ दीवाल ! न जाने तूने यो ही रह कर मेरी कितनी दीन कराह सुनी है निश्चल, क्योंकि प्राण पाइरैमस का मुझमें होता है वह वियोग जो, विरह रलाता !

मेरे अधर गुलाबी जाने कितनी-कितनी बार चूम है चुके कठिन तेरे ये पत्थर !
चूने में ये जड़े हुए से तेरे पत्थर !

पाइरैमस देख रहा हूँ मैं आवाज एक, तो अब मैं चलूँ छेद के पास भीत के,
एरे सुनूँ चलूँ प्यारी थिस्वी के मुख को,
थिस्वी मेरी !

थिस्वी • तुम मेरे प्रियतम हो, मेरे प्राण, ठीक क्या रही मोच में !

पाइरैमस तुम कुछ भी मोचो जो चाहो,
मैं हूँ वही तुम्हारा प्रेमी,
लाइसेन्डर मा अब भी हूँ विश्वासपात्र मैं ।

थिस्वी मे हेलेन की भाँति रहूँगी मृत्यु, मृत्यु तक ।
 पाइरैमस नहीं शैफैलुस' प्रोकुस के प्रति
 था सच्चा यो,
 थिस्वी मे प्रोकुस, तुम शैफैलुस के
 प्रति हूँ प्रिय ज्यो ।
 पाइरैमस प्रिये ! भीत की इस दरार से मुझको चूमो !
 अधम भीत है ।
 थिस्वी प्राण ! भीत की इस दरार को चूम रही हूँ,
 नहीं तनिक भी होठ तुम्हारे ।
 पाइरैमस कहो कि निन्नी की समाधि पर मुझे मिलोगी ?
 थिस्वी : जीवन मृत्यु शपथ से कहती, बिना देर के ।
 [पाइरैमस और थिस्वी का प्रस्थान]
 दीवाल . मैं दीवाल कर चुकी अपना पार्ट पूर्ण अब,
 यो कर चुक कर अब जाती हूँ अपने रस्ते ।
 [प्रस्थान]

थीसियस अब पड़ोसियों के बीच की दीवाल तो गायब हो गई ।
 डेमेट्रियस अब क्या चारा है श्रीमान् ! जब दीवालें भी बिना साव-
 धान किये ही सुनने को इतने स्वेच्छाचार से काम करे ।
 हिप्पोलिटा शायद मैंने इससे अधिक मूर्खता नहीं देखी ।
 थीसियस नाटक तो अच्छे से अच्छा भी छाया होता है, और बुरे से
 बुरा भी क्या बुरा है, अगर अपनी कल्पना उसके अभावो को
 पूरा कर ले ।

हिप्पोलिटा तब तो शायद यह उन लोगों की नहीं, आपकी कल्पना

१ सिर्फैलस का बिगड़ा रूप । यह एक प्रेमी था जो पत्नी के प्रति ईमान-
 दार रहा । प्ररोरा देवी भी इसे विचलित न कर सकी ।

होगी ?

थीसियस : अगर हम उनके बारे में वही सोचें जो वे अपने बारे में खुद सोचते हैं, तो यह सब लाजवाब आदमी निकलेंगे ! लीजिये दो जोरदार जतु आगये, एक सिंह है, एक मनुष्य ।

[सिंह और चांदनी का पुनः प्रवेश]

सिंह अहे देवियो ! आप, हृदय हैं जिनके कोमल मोटे चूहे को निहार कर कभी फर्श पर चलते जिनको डर लगता है । हो सकता है, काँप उठें श्री' मिहर उठें अब ।

जब गरजेगा सिंह क्रुद्ध हो बड़ी जोर से ।
जान लीजिये कि मैं, सिर्फ हूँ स्तन नामक
लुहार ही, छोटा सा हूँ शेर, नहीं सिंहनी का जाया,
यदि मगर में आऊँ यहाँ सिंह सा भीषण,
इसमें बढ़ कर करुण और क्या होगा इस मेरे
जीवन में ।

थीमियस किनना विनम्र जतु है ! और हृदय कितना पवित्र है ।
डेमेट्रियस जतुओं में एकमात्र जतु ! श्रीमान्, आज तक नहीं देगा ।
लाइसेन्डर वीरता में तो यह सिंह बिल्कुल लोमड़ी है ।
थीसियस बिल्कुल ! और विद्वक में तो वन्य समझिये ।
डेमेट्रियस नहीं श्रीमान् ! इसकी वीरता विवेक को नहीं ले जा सकती ।
और लोमड़ी वन्य को उठा ले जाती है ।

थीमियस इसका विवेक, मुझ निश्चय है इसकी वीरता को नहीं उठा सकता, क्योंकि वन्य लोमड़ी को नहीं उठा सकती । छोड़िये, उसे इसके ही विवेक पर डालिये । अब जरा चाँद की बात सुनिये ।
चाँदनी लालटेन यह नोकदार चढ़ा की प्रतिनिधि—

होगी ?

थोसियस : अगर हम उनके बारे में वही सोचे जो वे अपने बारे में खुद सोचते हैं, तो यह सब लाजवाब आदमी निकलेगे । लीजिये दो जोरदार जतु आगये, एक सिंह है, एक मनुष्य ।

[सिंह और चांदनी का पुनः प्रवेश]

सिंह

अहे देवियो ! आप, हृदय है जिनके कोमल मोटे चूहे को निहार कर कभी फर्श पर चलते जिनको डर लगता है । हो सकता है, काँप उठे औ' सिंह उठे अब ।

जब गरजेगा सिंह क्रुद्ध हो बड़ी जोर से ।
जान लीजिये कि मैं, सिर्फ हूँ स्नग नामक
लुहार ही, छोटा सा हूँ शेर, नहीं सिंहनी का जाया,
यदि सगर में आऊँ यहाँ सिंह सा भीषण,
इससे बढ कर करुण और क्या होगा इस मेरे
जीवन में ।

थोसियस कितना विनम्र जतु है ! और हृदय कितना पवित्र है ।

डेमेट्रियस जतुओ में एकमात्र जतु ! श्रोमान्, आज तक नहीं देखा ।

लाइसेन्डर वीरता में तो यह सिंह बिल्कुल लोमड़ी है ।

थोसियस बिल्कुल ! और विवेक में तो बतख समझिये ।

डेमेट्रियस नहीं श्रोमान् ! इसकी वीरता विवेक को नहीं ले जा सकती ।

और लोमड़ी बतख को उठा ले जाती है ।

थोसियस इसका विवेक, मुझे निश्चय है इसकी वीरता को नहीं उठा सकता, क्योंकि बतख लोमड़ी को नहीं उठा सकती । छोड़िये, इसे इसके ही विवेक पर डालिये । अब जरा चाँद की बात सुनिये ।

चाँदनी लालटेन यह नोकदार चढ़ा की प्रतिनिधि—

डेमेट्रियस इसको सिर पर सीग पहन कर आना चाहिये या ।

थीसियस वह नया चाँद नहीं, उसके सीग भीतर घुस गये हैं उसकी गोलाई में ।

चाँदनी लालटेन यह नोकदार चदा की प्रतिनिधि
और चाँद के भीतर का मैं मनुज स्वयं हूँ ।

थीसियस यह तो सबसे बड़ी गलती हो गई । इस आदमी को तो इस लालटेन के भीतर रखना चाहिये । वरना फिर यह चाँद के भीतर कहाँ है ?

डेमेट्रियस श्रीमान् ! वहाँ जाने की तो वह हिम्मत भी करेगा ।
मोमवत्ती जल रही है वहाँ । वैसे है तो यह मामला बुझता हुआ ही ।
हिप्पोलिटा मैं इस चाँद से ऊब गई हूँ । काश यह बदल जाता । कुछ करे तो ।

थीसियस ऐसा लगता है, यह जो इसमें विवेक या स्वेच्छा की ज्योति इतनी कम है, यह ढल रहा है । लेकिन फिर भी, दाक्षिण्य के कारण, हमें रुकना ही चाहिये ।

लाइसेन्डर हाँ चाँद ! आगे बोलो ।

चाँदनी मुझे आपसे जो कहना है, वह सिर्फ यही है कि लालटेन चाँद है, और मैं इस चाँद के भीतर का आदमी हूँ, यह भाड़ी कँटीली है, यह मेरी भाड़ी है, और यह कुत्ता मेरा कुत्ता है ।

डेमेट्रियस लेकिन यह सब तो लालटेन के भीतर रहने चाहिये । क्योंकि यह सब चाँद में है । लीजिये । खामोशी से सुनिये । आ रही है थिस्वी ?

[थिस्वी का पुनः प्रवेश]

थिस्वी यही पुरानी निन्नी की समाधि है, मेरा प्रिय न यहाँ क्या आया अब तक ?

सिंह (गरज कर) ओह

[थिस्वी भागती है ।]

डेमेट्रियस खूब गरजा । शाबाश गेर ।

हिप्पोलिटा खूब चमके चाँद । सचमुच ? क्या नजाकत से चाँद चमक रहा है ।

[शेर थिस्वी के चोरो को भिम्भोड कर चला जाता है ।]

थोर्सियस क्या चूहे की तरह फाडा है विल्ली जैसे शेर ने ।

डेमेट्रियस . फिर आ गया पाइरैमस ।

लाइसेन्डर लिहाजा शेर हो गया गायब ।

[पाइरैमस का पुन प्रवेश]

पाइरैमस मधुर चन्द्र । तेरी इन सूरज सी किरणों के कारण तुझको

धन्यवाद देता हूँ प्यारे, क्योंकि इस समय
चमक रहा तू खूब, क्योंकि मैं आशा करता
तेरी स्वर्णिम चमकदार दीपित किरणों की
स्निग्ध ज्योति मे, देख सकूँगा
थिस्वी के वास्तविक रूप को ।

किंतु अरे दुर्भाग्य ! ठहर जा ।

आह चिन्ह ! वह क्या है कह जा ।

कैसा यह हृत्भाग अरे क्या ?

देखो नयन ! देखते हो क्या ?

कैसे हो सकता है यह सब ?

मेरी प्यारी ! ओ स्वादिष्ट वनख ! ओ प्यारी !

तेरा चोगा, प्यारा चोगा ।

रंगा रक्त मे तेरा चोगा ।

अरी क्रूर देवियो ! टूट कर
मेरे सिर पर गिरो रोर भर ।
सर्वनाश कर दो तुम आओ ।
शात-शात कर ध्वम मचाओ ।

थोसियस यह वेदना, यह प्रिया की मृत्यु, यह दुःखद अत तो किसी
भी मनुष्य को उदास दिखा सकती थी ।

हिप्पोलिटा धिक् है मेरे हृदय को । मुझे इस पर दया आती है ।

पाइरेमस अरी प्रकृति ! क्यों बता किया है तूने कह तो
सिंहो का निर्माण भला इस वसुन्धरा पर ?
आह अधम है सिंह कि उसने मेरी प्रेयसि
थिस्वी को मारा है ऐसे
मेरी थिस्वी सकल लोक में सकल काल में
सर्वं श्रेष्ठ सुदरी, नहीं, हाँ, थी सचमुच ही,
वह रहती थी, और प्यार करती थी, थी वह
चाहा करती,

और प्रसन्न रहा करती थी ।

आओ अश्रु नयन यह भर दो,
निकलो खड्ग, घाव अब कर दो,
पाइरेमस की छाती फाड़ो ।

वाँई छाती में घुस जाओ,
जहाँ बडकता दिल घुस जाओ

[खड्ग मार लेता है ।]

अब मरता हूँ ऐसे ऐसे
अरे मर गया
अरे उड़ गया

मेरी आत्मा का चेतन तो नील गगन में
 ओ जिह्वा • खोदे प्रकाश निज
 चद्र ! भाग जा ! रस्ता ले निज
 [चाँदनी का प्रस्थान]

अब नरता हूँ, मरता हूँ मैं मरता मरता
 मरता मर मर

[मृत्यु]

डेमेट्रियस अभी नहीं मरा है । शर्त्त है इक्के की चोट ! अभी दम है ।
 लाइसेन्डर : इक्के से उतर कर बोलो ! वह तो मर गया । अब वह
 नहीं है ।

थीसियस नहीं, शायद चिकित्सक की सहायता से यह भी बच सकता
 है । और गधा प्रमाणित हो सकता है ।

हिप्पोलिटा यह क्या हुआ ? चाँदनी कैसे लौट गई ? अभी यिस्वी
 तो आई ही नहीं, अभी उसे उसका प्रियतम मिला ही कहाँ है ?

थीसियस वह उसे तारो की रोशनी में ढूँढ लेगी । वह आ गई और
 उसके उद्वेग के साथ नाटक भी समाप्त हो जायेगा ।

[यिस्वी का पुनः प्रवेश]

हिप्पोलिटा मुझे लगता है इसका भाषण ऐसे पाइरेमस के लिये
 ज्यादा लंबा न होगा । यह तो जल्दी खत्म कर देगी ।

डेमेट्रियस धूल का एक ज़र्रा तराजू के दोनों पलड़े बराबर किये देता
 है । कौन पाइरेमस कि यिस्वी, कौन किमने कम है ? वह पुरुष
 है, भगवान बचाये, यह स्त्री है, भगवान रक्षा करे ?

लाइसेन्डर उसने अपनी मुद्र आँखों में उसे देख भी लिया ।

डेमेट्रियस मतलब यह कि अब वह बोलेंगी—

यिस्वी प्रियतम मोने हो क्या बोलो ?

या मृत हो प्रिय । कुछ तो डोनों ।

जागो हे पाङ्गमम जागो ।

वोलो वोलो । हुए मूक तुम ?

हाय मर गये । बिल्कुल ही तुम ?

ओ समाधि मेरे प्रियतम की

प्यारी प्यारी आखे ढाँको ।

हाय फूल से होठ तुम्हारे,

और नासिका ज्यो कलिका रे ।

शुभ्र कुसुम सी वदन विभा ओ ।

गये गये सब हाय खो गये,

आह प्रेमियो । हृदय फट गये,

नयन तुम्हारे नयी प्याज की

हरी गाँठ से ये, मत जाओ ।

अहे भाग्य की क्रूर देवियो

दुग्ध श्वेत कर लेकर आओ

शोणित में अब हाथ डुवाओ

क्योंकि तुम्ही ने तो इसके रेशम का डोरा

हे फाड़ा ओ ।

जिह्वा । शब्द न बोल एक भी

ओ विश्वस्त, खड्ग अब जल्दी,

आ मेरी छाती मे तुम तो

जल्दी से घुस जाओ ।

[खड्ग मार लेती है ।]

विदा अलविदा मीत विदा लो,

यो थिस्वी मरती है देखो,

विदा, विदा दो, विदा, विदा ओ ।

[मृत्यु]

थीसियस अब चाँदनी और शेर रह गये मुर्दों को गाड़ने को ।

डेमेट्रियस जी हाँ । दीवाल भी तो है ।

बौटम (उठ कर) नहीं । मैं विश्वास दिलाता हूँ जिस दीवाल ने उनके पिताओं को अलग किया था वह गिर चुकी है । क्या आप अतिम वक्तव्य भी सुनना पसंद करेंगे या हमारी मडली के दो मनुष्यों का अब नृत्य देखना चाहेंगे ?

थीसियस नहीं अतिम वक्तव्य तो रहने ही दो । तुम्हारे खेल में किसी तरह की क्षमा माँगने की आवश्यकता ही नहीं है, क्षमा क्या होगी ? सारे पात्र तो मर गये, अब दोष किसे दिया जाये, सचमुच जिसने भी यह नाटक लिखा है, यदि वह पाइरेमस बनता और थिस्वी के जूते के फीते से फाँसी लगाकर मर जाता तो बड़ी जोर का दुःखात नाटक बनता । और वैसे है यह जोर का ही । भई, खूब किया । अब वह नृत्य शुरू करो । वह अतिम वक्तव्य तो छोड़ो ।

[नृत्य]

अर्द्धरात्रि के लोह जित्त ने बजा दिये हैं बारह अबतों,
चतों प्रेमियों । अब शैय्या पर,

अब परियों का समय होगया ।

मुझको डर है कहीं भोर में मोना पड़े न धूप
चढ़े तरु ।

कितनी देर हो गई देवों रान जागते ।

गोचर ही में स्थूल रूप इस नाटक ने भी
कितनी भारी रान ग्रसे यो ही ठग ली ये,

प्यारे मित्रो ! चलो चले अब हम सब सोने,
एक पक्ष तक नित्य यही आनंद हर्ष उत्सव हो मनहर,
हम आनंद मनायें तन्मय ।

[सत्रका प्रस्थान]

[पक का प्रवेश]

पक

गरज रहा है भूखा सिंह,
वृक रोता है चद्र निहार,
सौता खरटि भर शात
दिन भर के सब करके काम
थका किसान छोड़ सब भार ।
उठती है फिर चमक अबूझ
जलो काठ से लपट अबूझ,
उल्लू बोल रहा है गूँज
और दीन वह जो भयभीत
दुख में रोता है अनबूझ
उसे शवों की स्मृति की भीति ।
यही रात की वह है वेला
कब्रे जिसमें मुँह को खोल,
लेती है जमुहाई लवी
छायाएँ जाती हैं डोल ।
गिरजेघर के सूने पथ पर
चलती हैं छायाएँ और
हम परियाँ आत्याएँ जो हैं
रवि किरणों से अपनी ठौर
दूर बनाते अन्धकार के

स्वप्नों से चलते हैं भूम
 इसी समय करते हैं क्रीडा,
 यही समय है रिमक्ति भूम ।
 चूहा तक न यहाँ पर आये
 इस घर की न शांति को खोये
 इसीलिये भाडू देने को
 मैं हूँ भेजा गया यहाँ पर ।
 कूड़ा करकट सभी सँवार
 घर दूँ पीछे यह है द्वार ।

[ओवेरोन और टिटानिया का सेवकों के साथ प्रवेश]

ओवेरोन

इस घर में झिलमिल कोई रोशनी जलाओ,
 सुप्त अग्नि को थोड़ा सा ऊपर उकसाओ,
 परी परी, आत्मा आत्मा अब सुख में खेतो
 भाड़ी पर के विहग बनो तुम चहको डोलो ।
 गाओ गाओ गीत मधुर तुम मीठे स्वर से,
 नाचो नाचो अपने सारे आलस तज के ।

टिटानिया

पहले अपना गान सुनाओ हमको प्रियतम,
 सीखे उसके मीठे चरणों को हम निरुपम,
 फिर हाथों में हाथ प्रेम से उलझायेगे
 और नाचते हुए एक स्वर से गायेगे ।

[नृत्य और गीत]

ओवेरोन

अब प्रभात तक इस प्रकोष्ठ से
 परी और आत्माएँ मारी करे पत्तायन,
 हम भी सुप्त शैया पर जाये और प्रेम में
 जा कर मोये,

हो अपनी सतान सदा सौभाग्य प्राप्त ही ।
 ऐसे ही यह दपति तीना सदा सुखी हो
 तच्चा प्रेम करे और पाये हर्ष सदा ही ।
 नही प्रकृति-कर के कलक अब
 बाधाएँ उनके जीवन में बन पायें ।
 उनके वच्चो के तन पर तिल, दाग, कि लहसुन,
 ऐसे चिन्ह नही जो शुभ है माने जाते—
 कभी न आये ।

नीहारो की मन्द मन्द झिलमिल में परियो ।
 इस प्रासाद भव्य के भिन्न प्रकोष्ठो में तुम
 मधुर शांति से जा कर अब विश्राम करो चल ।
 इसके स्वामी को आशिष दो । त्वर गति जाओ ।
 भिनसारे जब भोर किरन नभ में बल खाये,
 मेरे पास लौट आ जाना ।

[ओवेरोन, टिटानिया तथा अन्यो का प्रस्थान]

पक

यदि हम छायाओ ने सचमुच किया आपको
 अप्रमन्न है,
 यही सोचिये, सब चलता है, और आप सो लिये
 यही पर ।

यह रूपक था दीन अकिंचन,
 नही कथानक भी था सुदर,
 किंतु स्वप्न था, नही स्वप्न से अधिक कहूँ कुछ,
 वृग नही मानिये जरा भी, तब तो हम सुधार
 कर लेगे,

मे पक हूँ ईमानदार हाँ ।

हो सकता है हमने किस्मत नहीं कमाई
 पर अब साँपों की फुसफुस से^१
 वचने को मैं बात बदल कर जाता हूँ यो ।
 बर्ना फिर पक होगा झूठा,
 नमस्कार सबको हे भाई ।
 यदि हम में हे मीत । मितार्ई,
 तो रोविन ने क्षमा उगाही ।

[प्रस्थान]

१ दर्जनों साँपों-साँपों करके बत्ता को चुप कराना । दर्जनों आवाजों के पर
 भी जगह के बिना साँप ने होते हैं ।